वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 115 | सोमवार 19 अगस्त 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर

मुख्यमंत्री की सीकर यात्राः पेपर लीक प्रकरणों में किसी भी दोषी को नहीं बख्शा जाएगा

प्रदेश के प्रत्येक युवा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना हमारी प्राथमिकताः मुख्यमंत्री

शेखावाटी अंचल को जल्द मिलेगा यमुना का जल

सीकर/जयपुर. कासं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जीवन को सही दिशा देने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे न केवल विद्यार्थियों को शिक्षा का महत्व बताते हैं बल्कि उन्हें जीवन की हर परिस्थिति का सामना कर सफल बनने के लिए मार्गदर्शित भी करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इसी गुरू-शिष्य परंपरा को सुदृढ़ करने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है तथा प्रदेश के प्रत्येक युवा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। शर्मा रविवार को सीकर के सीएलसी संस्थान में पंडित हरिनाथ चतुर्वेदी और संत शिरोमणि मकड़ीनाथ जी महाराज के मूर्ति अनावरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पेपर लीक प्रकरणों से युवाओं के सपनों पर कुठाराघात हुआ था। राज्य सरकार द्वारा इस पर त्वरित कार्यवाही करते हुए एसआईटी का गठन कर अब तक 157 लोगों को गिरफ्तार भी किया जा चुका है। उन्होंने युवाओं को आश्वस्त किया कि युवाओं के साथ धोखा करने वाले किसी भी अपराधी को नहीं बख्शा जाएगा। शर्मा ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2014 के बाद देश में अभूतपूर्व बदलाव आए हैं। प्रधानमंत्री द्वारा गरीब कल्याण, सीमा सुरक्षा तथा आर्थिक सशक्तीकरण के विभिन्न निर्णय लिए गए हैं, जिससे विदेशों में भारत का सम्मान बढ़ा है। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने सामाजिक सरोकारों को बढ़ावा देते हुए आमजन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के लिए ''स्वच्छ भारत अभियान'', महिला लिंगानुपात में सुधार लाने के लिए ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' अभियान तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए ''एक पेड़ मां के नाम'' अभियान प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कि ''विकसित भारत-विकसित राजस्थान'' की संकल्पना को साकार रूप देने के लिए हमारी सरकार तेजी से कार्य कर रही है।

युवाओं को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाना हमारी प्राथमिकता

शर्मा ने कहा कि युवाओं को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। सरकारी परीक्षाओं में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करते हुए इस वर्ष एक लाख भर्तियों के लक्ष्य के साथ आगामी पांच वर्षों में 4 लाख भर्तियां की जाएंगी। राज्य सरकार द्वारा आगामी पांच वर्षों में निजी क्षेत्र के साथ मिलकर प्रदेश में कुल 10 लाख रोजगार के अवसरों का सृजन किया जाएगा। कैलेण्डर बनाकर निरंतर भर्ती प्रक्रियाओं को गति दी जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के लिए स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी तथा संभाग स्तर पर महाविद्यालय खोले जाएंगे जिससे खिलाड़ी देश-प्रदेश का नाम विश्व स्तर पर रोशन कर सकें।

बिजली-पानी की आपूर्ति के लिए लगातार ले रहे अहम निर्णय

मुख्यमंत्री ने कहा कि उद्योग, पर्यटन, कृषि सहित विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए पानी की आवश्यकता होती है। इसको ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार बिजली एवं पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए लगातार निर्णय ले रही है। ईआरसीपी, देवास परियोजना, इंदिरा गांधी नहर एवं यमुना जल समझौता जैसे अहम कदमों से राज्य में जलापूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी। उन्होंने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार द्वारा बिजली आपूर्ति के संबंध में कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया।

बजट में सीकर का रखा पूरा ध्यान

मुख्यमंत्री ने कहा कि बजट में सीकर का पूरा ध्यान रखते हुए ढेरों घोषणाएं की गई हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार का गठन होते ही शेखावाटी क्षेत्र में यमुना का जल पहुंचाने के लिए लिए तीन दशक से अटके यमुना जल समझौता को पूरा किया। शर्मा ने कहा कि 100 करोड़ रुपए से खाटूश्याम कॉरिडोर का विकास, 90 करोड़ रुपये की लागत से एनएच-52 रामू का बास से एसएच-8 कुड़ली बाइपास सड़क संबंधित कार्य करवाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि धार्मिक स्थल शाकम्भरी के विकास कार्य सहित सीकर की आईटीआई में 3डी प्रिंटिंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, फाइबर टू होम तकनीशियन, मल्टीमीडिया, एनीमेशन आदि से संबंधित ट्रेड्स प्रारंभ किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि वेद विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मानदेय को 8 हजार रुपये से बढ़ाकर 15 हजार रुपये प्रतिमाह करने तथा सीकर में विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट (भ्रष्टाचार निरोधक एक्ट) न्यायालय खोले जाने की घोषणा की गई है। नगरीय विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) झाबर सिंह खर्रा ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य में प्रत्येक क्षेत्र में चहुमुंखी विकास हो रहा है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने परिसर में पंडित हरिनाथ चतुर्वेदी और संत शिरोमणि मकड़ीनाथ जी महाराज की मूर्ति का अनावरण भी किया। इस दौरान आयोजित रोड शो में शहरवासियों ने विभिन्न स्थानों पर पुष्प वर्षा कर मुख्यमंत्री का भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया।

जनकपुरी जयपुर से गये यात्रा दल ने गोलाकोट अतिशय क्षेत्र में किए 108 रजत कलश से अभिषेक, शान्तिधारा तथा चढ़ाया छत्र

जयपुर. शाबाश इंडिया। जनकपुरी जयपुर से बुधवार को गये पंद्रह सदस्यीय यात्रा दल ने शुक्रवार को गोलाकोट अतिशय क्षेत्र में अभिषेक शान्तिधारा व छत्र चढ़ाकर पुण्यार्जन किया। यात्रा दल ज्ञान तीर्थ मोरेना , सोनागिरी होते हुए गोलाकोट पहुँचा जहां बड़े बाबा आदिनाथ के दर्शन किए । जिसके बाद दल के शिखर चंद जैन , सौभाग अजमेरा तथा पहुप बिलाला ,आदिश बिलाला ने विश्व शांति हेतु बीजाक्षर युक्त शांतिधारा की । इधर 108 रजत कलश से अभिषेक करने का कमलेश पाटनी , सुनील सेठी को , छत्र समर्पित करने का पदम जैन बिलाला परिवार को तथा श्री जी की आरती करने का पुष्पा बिलाला परिवार को सौभाग्य मिला । क्षेत्र के प्रबंधक ने यात्रा दल की किरण जैन ,रुचिका जैन , दीपा पाटनी , अलका सेठी , व आदिवा का अभिनंदन किया । यात्रा दल ने भक्ति साधना करते हुए शुक्रवार को ही थूबोनजी क्षेत्र के 27 मंदिरों के दर्शन कर धर्म व दर्श लाभ लेते हुए जयपुर वापसी की ।

लायन्स क्लब सेन्ट्रल व विवेकानन्द ऐकेडमी का रक्तदान शिविर, 172 यूनिट एकत्रित हुआ ब्लड कलेक्शन

आजाद शेरवानी. शाबाश इंडिया

कोटा। लायंस क्लब कोटा सेंट्रल और विवेकानंद सिविल सर्विसेज एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में दानवाड़ी, ए सी वाले गणेश जी के पास अग्रवाल ब्लड बैंक के सहयोग से विशाल रक्तदान शिविर रखा गया। क्लब अध्यक्ष मधु ललित बाहेती और सेक्रेटरी राधा खुवाल ने बताया कि बड़ी संख्या में दर्शनार्थियों और स्टूडेंट्स को रक्तदान हेतु मोटिवेट और प्रेरित किया। शिविर संयोजक चंदा बरवाड़िया, एकेडमी के ललित सर, जितेंद्र सर ने बताया कि प्रातः 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक 172 यूनिट रक्त कलेक्शन किया गया। शिविर में ममता विजय, सुमन शर्मा, भगवती सेठिया, कैलाश सेठिया, ललित बाहेती, रीजन चेयरमैन दिनेश खुवाल और डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन हंगर राजकुमार गुप्ता ने सहयोग किया ।

जैन सोशल ग्रुप मिटाउन जयपुर की तमिलनाडु जैन अतिशय क्षेत्र यात्रा संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

प्राचीन जैन धर्म का इतिहास देखने हेतु दक्षिण भारत के लगभग 1200 वर्ष प्राचीन मंदिरों के दर्शन हेतु 10अगस्त से 16 अगस्त तक जैन सोशल ग्रुप मिड टाउन ने पूर्व की भाती इस वर्ष भी 88 सदस्यों के दल के साथ तमिलनाडु के मंदिरों की यात्रा की। यह दल जयपुर से हवाई यात्रा कर चेन्नई पहुंचा और वहां से लगभग 15 इनोवा कार से आगे

की यात्रा संपन्न की। यह यात्रा कांचीपुरम मुनिगिरी वेलकम आर्मी पोंडी अरिहंत गिरी मृदुल प्रनामलाई पुन्नू राहुल जिन कांची मंदिर 24 तीर्थंकर मंदिर वेणुकाम गोल्डन रथ इत्यादि मंदिरों के दर्शन करते हुए पांडिचेरी पहुंची। जहां पर स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम भी सदस्यों के द्वारा अति उत्साह पूर्वक मनाया गया। वहां के मंदिरों के दर्शन एवं पर्यटन स्थलों का आनंद लेते हुए 16 अगस्त को रात्रि में यह दल जयपुर पहुंच। इस पूरी यात्रा में किचन वेन साथ में थी। संस्थापक अध्यक्ष उजास प्रमिला जैन ने अध्यक्ष संजय समता संयोजक मनोज रेनू, धर्मेश कल्पना, नवीन अंजना, शरद प्रमिला एवं पंकज रचना का यात्रा के निर्विघ्नम एवं शानदार आयोजन के लिए तहे दिल से धन्यवाद किया।

समझिये धागों से बंधे 'रक्षा बंधन' के मायने

भाई-बहन का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों में सबसे ऊपर है। हो भी न क्यों, भाई-बहन दुनिया के सच्चे मित्र और एक-दूसरे के मार्गदर्शक होते है। जब बहन शादी करके ससुराल चली जाती है और भाई नौकरी के लिए घर छोड़कर किसी दूसरे शहर चला जाता है तब महसूस होता है कि भाई-बहन का ये सर्वोत्तम रिश्ता कितना अनमोल है। सरहद पर खड़ा एक सैनिक भाई अपनी बहन को कितना याद करता है और बहनों की ऐसे वक़्त क्या दशा होती है इसके लिए शब्द नहीं है। रंग-बिरंगे धागे से बंधा ये पवित्र बंधन सदियों पहले से हमारी संस्कृति से बहुत ही गहराई के साथ जुड़ा हैं। यह पर्व उस अनमोल प्रेम का, भावनाओं का बंधन है जो भाई को सिर्फ अपनी बहन की नहीं बल्कि दुनिया की हर लड़की की रक्षा करने हेतु वचनबद्ध करता है। भाई-बहन के आपसी अपनत्व, स्नेह और कर्तव्य बंधन से जुड़ा त्योहार भाई-बहन के रिश्ते में नवीन ऊर्जा और मजबूती का प्रवाह करता है। बहनें इस दिन बहुत ही उत्साह के साथ अपने भाई की कलाई में राखी बांधने के लिए आतुर रहती हैं। जहां यह त्योहार बहन के लिए भाई के प्रति स्नेह को दशार्ता है तो वहीं यह भाई को उसके कर्तव्यों का बोध कराता है। रक्षाबंधन भाई बहन के रिश्ते का त्योहार है, रक्षा का मतलब सुरक्षा और बंधन का मतलब बाध्य है। रक्षाबंधन के दिन बहने भगवान से अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। राखी सामान्यतः बहनें भाई को ही बाँधती हैं परन्तु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित सम्बंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता को) भी बाँधी जाती है। वास्तव में ये त्योहार से रक्षा के साथ जुड़ा हुआ है, जो किसी की भी रक्षा करने को प्रतिबद्ध करता है। अगर इस पवित्र दिन अपनी बहन के साथ दुनिया की हर लड़की की रक्षा का वचन लिया जाए तो सही मायनों में इस त्योहार का उद्देश्य पूर्ण हो सकेगा। इस पावन त्योहार का अपना एक अलग स्वर्णिम इतिहास है, लेकिन बदलते समय के साथ बाकी रिश्तों की तरह इसमें भी बहुत से बदलाव आए हैं। जैसे-जैसे आधुनिकता हमारे मूल्यों और रिश्तों पर हावी होती जा रही है। संस्कृति में पतन के फलस्वरूप रिश्तों में मजबूती और प्रेम की जगह दिखावे ने ले ली है। आज के बदलते समय में इस त्योहार पर भी आधुनिकता हावी होने लगी है, तब से आज तक यह परंपरा तो चली आ रही है लेकिन कहीं न कहीं हम अपने मूल्यों को खोते जा रहे हैं। रंग-बिरंगे धागों में अब अपनत्व की भावना और प्रेम की गर्माहट कम होने लगी है। एक समय में जिस तरह के उसूल और संवेदना राखी को लेकर थी शायद अब उनमें अब रुपयों के नाम की दीमक लगने लगी है फलस्वरूप रिश्तों में प्रेम की जगह पैसे लेने लगे हैं। ऐसे में संस्कृति और मूल्यों को बचाने के लिए आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधी राखी का सम्मान करने की। क्योंकि राखी का ये अनमोल रिश्ता महज कच्चे धागों की परंपरा भर नहीं है। लेन-देन की परंपरा में प्यार का कोई मूल्य भी नहीं है।

बल्कि जहां लेन-देन की परंपरा होती है वहां प्यार तो टिक ही नहीं सकता, अटूट रिश्ते कैसे बन पाएंगे। इतिहास मे कृष्ण और द्रौपदी की कहानी प्रसिद्ध है, जिसमे युद्ध के दौरान श्री कृष्ण की उंगली घायल हो गई थी, श्री कृष्ण की घायल उंगली को द्रौपदी ने अपनी साड़ी मे से एक टुकड़ा बाँध दिया था, और इस उपकार के बदले श्री कृष्ण ने द्रौपदी को किसी भी संकट मे द्रौपदी की सहायता करने का वचन दिया था। रक्षा बंधन की कथाएं बताती हैं कि पहले खतरों के बीच फंसी बहन का साया जब भी भाई को पुकारता था, तो दुनिया की हर ताकत से लड़ कर भी भाई उसे सुरक्षा देने दौड़ पड़ता था और उसकी राखी का मान रखता था। कहते हैं, मेवाड़ की रानी कर्मावती को बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली। रानी लड़ने में असमर्थ थी अतः उसने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेज कर रक्षा की याचना की। हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी और मेवाड़ पहुँच कर बहादुरशाह के विरूद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मावती व उसके राज्य की रक्षा की। जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी। यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था। कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय उनकी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया। कहते हैं परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबन्धन के पर्व में यहीं से प्रारम्भ हुई। आज एक बार फिर भातृत्व की सीमाओं को बहन फिर चुनौती दे रही है, क्योंकि उसके उम्र का हर पड़ाव असुरक्षित है, उसकी इज्जत एवं अस्मिता को बार-बार नोचा जा रहा है। लड़कों से ज्यादा बौद्धिक प्रतिभा होते हुए भी उसे ऊंची शिक्षा से वंचित रखा जाता है, क्योंकि आखिर उसे घर ही तो संभालना है। उसे नयी सभ्यता और नयी संस्कृति से अनजान रखा जाता है, ताकि वह भारतीय आदर्शों व सिद्धांतों से बगावत न कर बैठे। इन विपरीत हालातों में उसकी योग्यता, अधिकार, चिंतन और जीवन का हर सपना कसमसाते रहते हैं। इसलिए मेरा मानना है कि राखी के इस परम पावन पर्व पर भाइयों को ईमानदारी से पुनः अपनी बहन ही नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत की सुरक्षा और सम्मान करने की, कसम लेने की अहम जरूरत है। तभी ये राखी का पावन पर्व सार्थक बन पड़ेगा और भाई-बहन का प्यार धरती पर शाश्वत रह पायेगा। यह पर्व भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्त्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फिल्में भी इससे अछूते नहीं हैं। रक्षाबन्धन पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का सांस्कृतिक उपाय रहा है लेकिन अब प्रेम रस में डूबें रंग-बिरंग धागों की जगह चांदी और सोने की राखियों ने ली तो सामाजिक व्यवहार में कर्तव्यों को समझने के बजाय रिवाज को पूरा करने कि नौबत आई। प्रेम और सद्भावना की जगह दिखावे ने ले ली। तभी तो रक्षा-बंधन के दिन सुबह उठते ही हर किसी के स्टेटस पर बस रक्षाबंधन की तस्वीरें और वीडियो की भरमार होती है, अब बहनों की जगह ई-कॉमर्स साइट ऑनलाइन आर्डर लेकर राखी दिये गये पते पर पहुँचाती है। अगर हम सोशल मीडिया पर दिखावे की जगह असल जिंदगी में इन रिश्तों को प्रेमरुपी जल से सींचा जाए तो हमेशा परिवार में मजबूती बनी रहेगी। राखी के त्योहार का मतलब केवल बहन की दूसरों से रक्षा करना ही नहीं होता है बल्कि उसके अधिकारो और सपनों की रक्षा करना भी भाई का कर्तव्य होता है, लेकिन क्या सही मायनों में बहन की रक्षा हो पाती है। आज के समय में राखी के दायित्वों की रक्षा करना बेहद आवश्यक हो गया है। राखी के दिन केवल अपनी बहन की रक्षा का संकल्प मात्र नहीं लेना चाहिए नहीं बल्कि संपूर्ण नारी जगत के मान-सम्मान और अधिकारों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए ताकि सही मायनों में राखी के दायित्वों का निर्वहन किया जा सके। रक्षाबंधन पर्व पर हमें देश व धर्म की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए।

चिट्ठी लाई गाँव से, जब राखी उपहार ।
आँसू छलके आँख से, देख बहन का प्यार ।।
रक्षा बंधन प्रेम का, हृदय का त्योहार ।
इसमें बसती द्रौपदी, है कान्हा का प्यार ।।
कहती हमसे राखियाँ, तुच्छ है सभी स्वार्थ ।
बहनों की शुभकामना, तुम्हें करे सिद्धार्थ ।।
भाई-बहना नेह के,रिश्तों के आधार ।
इस धागे के सामने, सब कुछ है बेकार ।।
बहना मूरत प्यार की, मांगे ये वरदान ।
भाई को यश-बल मिले, लोग करे गुणगान ।।
सब बहनों पर यदि करे, मन से सच्चा गर्व ।
होता तब ही मानिये, रक्षा बंधन पर्व ।।

-प्रियंका सौरभ
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस

वेद ज्ञान

विश्व शांति

पूर्व के देशों में लोगों की यह मान्यता है कि मनुष्य जीवन के तीन पहलू हैं और तीनों का विकास होना चाहिए। ये पहलू हैं-बौद्धिक, शारीरिक और आध्यात्मिक। दुर्भाग्य से हम अपने आध्यात्मिक पहलू को भूल गए हैं, जबकि हम बौद्धिक हैं और शारीरिक विकास में बहुत आगे बढ़ चुके हैं। चाहे कोई पूर्व से हो या पश्चिम से, सभी आमतौर से यह मानते हैं कि हमारे शरीर में आत्मा का निवास है और आत्मा ही वह ताकत है, जो हमें जीवित रखती है। यह विश्वास किया जाता है कि जब आत्मा शरीर को छोड़ती है तो मृत्यु हो जाती है। हम खुशनसीब हैं कि हमने मनुष्य जन्म पाया है। अपने इसी जीवन में यदि हम अपने आध्यात्मिक विकास के लिए समय नहीं निकालेंगे तो हम मनुष्य जन्म का पूरा फायदा हासिल नहीं कर सकेंगे। अध्यात्म जीवन के उच्च आदर्शों को विकसित करना सिखाता है और बेहतर इंसान बनाना सिखाता है। अध्यात्म का मतलब है बिना रंग, धर्म, देश, अमीर-गरीब या पूर्व-पश्चिम का भेदभाव बगैर पूरी इंसानियत के प्रति अपने दिलों में प्यार पैदा करना। प्रभु की ज्योति सभी लोगों के अंदर है, यह अहसास हमें विश्व में शांति और समता का भाव लाने में मदद करेगा। एक बार हम महसूस कर लें कि हमारी आत्मा, परमात्मा का अंश है और यह अंश सभी इंसानों के अंदर समान रूप से है और इंसान ही नहीं, सृष्टि के सभी जीवों में है तो हम किसी का कोई नुकसान नहीं करेंगे। उसके बाद हम सबके अंदर अच्छाई देखना शुरू कर देंगे। हम दूसरों की भलाई के बारे में सोचने लग जाएंगे। हम प्रकृति को नष्ट करना बंद कर देंगे। प्रभु ने इस पृथ्वी पर जिंदा रहने के लिए कुदरत के उपहार प्रदान किए हैं। जब हम कुदरत की चीजों को नष्ट करते हैं, जो हमें मिली हैं, अथवा जब हम जमीन से अपनी जरूरत से अधिक वस्तुएं लेते हैं तो जमीन को सुधारने के बजाय उसे प्रदूषित करते हैं। इस स्थिति में हम पूरी दुनिया को नुकसान पहुंचाते हैं। ब्रह्मांड को पूरे संतुलित तरीके से बनाया गया है। यदि हम प्रकृति का पूरा ध्यान नहीं रखते हैं तो बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। और यदि हम स्वयं का पूरा ध्यान नहीं रखते हैं तो बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। चाहें वह बौद्धिक रूप से हो, शारीरिक रूप से हो या आध्यात्मिक रूप से हो तो दुनिया में हमारा जीवन भी प्रभावित होता है।

संपादकीय

देश की अर्थव्यवस्था में तेजी से मजबूती आने की उम्मीद

अठहत्तरवें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार फिर अपनी सरकार की उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ भावी चुनौतियों पर बात की और यह संदेश देने की कोशिश की कि राष्ट्रीय सामूहिकता की भावना साथ हो तो किसी भी बाधा को आसानी से पार किया जा सकता है। हालांकि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने भाषणों में आमतौर पर वे व्यापकता के साथ मुद्दों पर बात करते रहे हैं और

इस बार का वक्तव्य भी इसकी कड़ी ही रही। इस बार भी उन्होंने वे तमाम मुद्दे उठाए, जिनसे आम जनता खुद को प्रभावित या जुड़ी हुई महसूस करती है। मसलन, किसानों, सैनिकों और युवाओं को सलाम करते हुए उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा भी मुखरता के साथ उठाया। साफ लहजे में जिस तरह उन्होंने राज्य सरकारों को यह निर्देश दिया कि महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामलों को गंभीरता से लेना चाहिए, वह केंद्र से लेकर राज्य तक सभी सरकारों की इच्छाशक्ति का मामला होना चाहिए। यह छिपा नहीं है कि सख्त कानूनी प्रावधान होने के बावजूद कई बार अपराधियों के भीतर उसका डर नहीं होता, क्योंकि वे इसे लेकर आश्वस्त रहते हैं कि अगर कभी वे गिरफ्त में आए तो भी बच निकलेंगे। इसलिए अगर प्रधानमंत्री ने कहा कि महिलाओं के खिलाफ अपराध के दोषियों के मन में डर बिठाना जरूरी है, तो इसका आशय समझा जा सकता है। व्यापक जन जीवन से जुड़ी चिंताओं को रेखांकित करते हुए वे निश्चित रूप से जोखिम के बीच में जीवन गुजारने वाली महिलाओं और अन्य वर्गों के हित की बात कर रहे थे, मगर इससे आगे उन्होंने 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने का अपनी सरकार का संकल्प जाहिर किया। इसके तहत उन्होंने प्रति व्यक्ति आय दोगुनी करने में कामयाबी मिलने, निर्यात में बढ़ोतरी, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के बीच भारत के लिए भरोसे में मजबूती और युवाओं में बड़े पैमाने पर रोजगार के नए अवसर मिलने की बात कही। जाहिर है, अगर वास्तव में ये संकल्प जमीन पर उतरे तो देश की अर्थव्यवस्था में तेजी से मजबूती आने की उम्मीद की जा सकती है। यह छिपा नहीं है कि हर वर्ष भारी संख्या में युवा चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई करने दूसरे देशों में जाते रहे हैं। इसका मुख्य कारण यहां दाखिले के लिए जगहों का अभाव रहा है। अब प्रधानमंत्री ने अगले पांच वर्ष में चिकित्सा क्षेत्र में पचहत्तर हजार नई सीटें सृजित करने की घोषणा की है। अगर यह घोषणा अमल में आती है तो पढ़ाई के लिए विदेश जाने वाले विद्यार्थियों के लिए भारत में कितने अवसर बनेंगे, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने किसानों को नई तकनीक से जोड़ने, प्राकृतिक खेती के लिए बजट बढ़ाने और रक्षा सामग्रियों के निर्माण में देश की धमक बढ़ने को लेकर जो बातें कीं, वे मौजूदा सरकार की दृष्टि को रेखांकित करती हैं।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

बेहतर जीवन की आस...

दुनिया भर में तालिबान को कट्टर धार्मिक विचारधारा और प्रतिगामी मूल्यों के वाहक के तौर पर ही जाना जाता है। मगर उम्मीद की जाती थी कि अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज होने के बाद उसके भीतर कुछ बदलाव आएगा और वह देश के समग्र विकास की दिशा में सोचेगा। अफसोस कि अब तक ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है, जिससे वहां के लोगों, खासकर महिलाओं में अपने बेहतर जीवन और भविष्य को लेकर कोई उम्मीद जगे। संयुक्त राष्ट्र की एक रपट में बताया गया है कि तालिबान ने सत्ता में आने के बाद कम से कम चौदह लाख लड़कियों को जानबूझ कर माध्यमिक शिक्षा से वंचित कर दिया है। यूनेस्को के मुताबिक, पिछले वर्ष अप्रैल में हुई गणना के बाद इसमें तीन लाख की बढ़ोतरी हुई है। अगर इसमें उन लड़कियों की संख्या भी जोड़ ली जाए, जो प्रतिबंध लागू होने से पहले स्कूल नहीं जा रही थीं, तो अब देश में लगभग पच्चीस लाख यानी अस्सी फीसद लड़कियां शिक्षा के अधिकार से वंचित हैं। इस तरह, अफगानिस्तान का समाज एक तरह से अधूरे विकास के दौर से गुजर रहा है, जिसमें वहां की महिलाओं की पढ़ाई-लिखाई को धर्म और परंपरा के खिलाफ माना जाता है। हालांकि 2021 में जब तालिबान अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज हुआ था, तो उसने कठोर इस्लामी शासन से राहत देने का आश्वासन दिया था। मगर अगले ही वर्ष वहां लड़कियों की शिक्षा पर पाबंदी लगा दी गई, महिलाओं को सरकारी नौकरियों में नहीं जाने दिया गया और उनके अकेले लंबी यात्रा करने पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। ऐसे में यह समझना मुश्किल नहीं है कि वहां की महिलाओं का जीवन कैसा होगा। विचित्र है कि एक ओर तालिबानी शासन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता पाने की इच्छा रखता है, लेकिन दूसरी ओर वहां की महिलाओं को पढ़ाई-लिखाई तक से वंचित रखना अपनी जिम्मेदारी समझता है। तालिबान

अपनी महिलाओं को हर दायरे से बाहर रख कर भले अपनी तथाकथित परंपरा को बचा लेने का दावा करे, लेकिन हकीकत यह है कि इस तरह वहां एक अधूरा समाज बनेगा, जिसमें महिलाओं का जीवन दोयम दर्जे का होगा। कोई भी समाज महिलाओं को हाशिये पर रख कर मानवीय होने का दावा नहीं कर सकता।

आयुर्वेद मर्म चिकित्सा के 43वें सेमिनार का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

एक्यूप्रेशर सेवा समिति जयपुर द्वारा आयुर्वेद मर्म चिकित्सा की 43 वीं सेमिनार का आयोजन किया गया। आयुर्वेद के 107 मर्म केंद्रों का उपयोग करके शरीर की बाधित ऊर्जा को संतुलित करने के लिए हल्की संवेदना की जाती है। यह प्राचीन चिकित्सा प्रणाली शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाने में मदद करती है , आज की कार्यशाला में कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय के प्रोफेसर डा पी सी मंगल और वरिष्ठ आयुर्वेद विद्वान डा एस एन शर्मा, डा शिव शंकर गौड़ ने सभी लोगों को आयुर्वेद की दिनचर्या का पाठ पढ़ाया , मुख्य अतिथि जे के मीणा कमिश्नर इनकम टॅक्स, बड़ौदा थे। अध्यक्ष एक्यूप्रेशर सेवा समिति डा पीयूष त्रिवेदी आयुर्वेद मर्म चिकित्सक ने सभी मर्म चिकित्सा सीखने आए आगुंतकों का स्वागत किया।

जैन पाठशाला के बच्चों ने सलुना पर्व मना जिन धर्म जिनशासन की रक्षा का संकल्प लिया

अजीत कोठिया. शाबाश इंडिया

डडूका जिला बांसवाड़ा। दिगंबर जैन पाठशाला डडूका के 31 बच्चो ने रक्षा बंधन पर्व की पूर्व संध्या पर सलुना पर्व मनाया और एक दूसरे को रक्षा सूत्र बांध जिन धर्म और जिनशासन की रक्षा का संकल्प लिया। प्रारंभ में अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर आयोजन का शुभारंभ किया। पाठशाला प्रेरक अजीत कोठिया, धनपाल शाह तथा समाज अध्यक्ष मनोज शाह ने अतिथियों का स्वागत किया। पाठशाला के मंत्री रीतेश जे शाह ने पाठशाला की नवाचार युक्त गतिविधियों की सराहना की। इस अवसर पर राजेन्द्र कोठिया, अशोक के शाह, वस्तुपाल शाह, अनिल कोठिया, कुसुम कोठिया, निशा कोठिया, जैनी जैन, जैन युवा समिति अध्यक्ष अंकित डी शाह तथा योगेश शाह सहित कई अभिभावक एवं पंच उपस्थित थे। बच्चो को रक्षा बंधन के धार्मिक महत्वयुक्त एक टेलीफिल्म भी दिखाई गई जिसमे बताया गया की किस प्रकार विष्णु कुमार मुनि ने अकंपनाचार्य आदि 700मुनियों की रक्षा कर जैन दर्शन अनुसार रक्षा बंधन पर्व का शुभारंभ किया था। संचालन अजीत कोठिया ने किया आभार धनपाल शाह ने व्यक्त किया।

जैन सोशल ग्रुप नार्थ ने 121 जयपुर फुट लगवाए

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप नॉर्थ, जयपुर द्वारा 17 अगस्त को महावीर विकलांग समिति परिसर मे निर्धन एवं आर्थिक हस्टि से कमजोर वर्ग के 121 व्यक्तियों को जयपुर फुट लगवाए। ग्रुप के अध्यक्ष सुनील सोगानी ने बताया कि जे एस जी के इतिहास मे पहली बार इतनी बड़ी संख्या मे एक साथ जयपुर फुट लगवाए गए। कैंप की शुरूआत णमोकार मन्त्र से हुई डॉ रजनीश बेगानी एवं डॉ शैलेन्द्र मेहता ने बाहर से आये मरीजों से मिलवाया। उनकी जानकारी अवगत कराई एवं जयपुर फुट के बारे में विस्तार से जानकारी दी। ग्रुप सचिव विशुतोष चाँदवाड एवं मुख्य समन्वयक अजय बड़जात्या ने बताया कि डॉ शैलेन्द्र मेहता ने विकलांग हॉस्पिटल का अवलोकन करवाया और फुट से सम्बंधित सभी कच्चे सामान के बारे मे जानकारी दी। डॉ मेहता ने बताया कि अब तक 22 लाख लोगो को निशुल्क जयपुर फुट लगा चुके है। रोजाना 160 फुट तैयार किये जाते है सुबह आये मरीज को शाम तक फुट तैयार कर लगा देते है। बाहर से आने वाले मरीज एवं परिजन का भोजन -नाश्ते की व्यवस्था समिति वाले ही करवाते है। अब तक विकलांग समिति टीम ने देश - विदेश मे बहुत कैंप लगा कर जयपुर फुट लगा दिये है। ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष मनीष झाँझरी एवं पूर्व अध्यक्ष राहुल जैन, अभय गंगवाल ने बताया कि इस मोके पर डी आर मेहता साहब ने भी अपने विचार ग्रुप के सदस्यों के साथ शेयर किये मेहता साहब ने बताया कि ये संस्था 1968 से शुरू हुई जिसका मूल उद्देश्य विकलांग लोगो को निशुल्क फुट लगाना है। इस अवसर पर जैन सोशल ग्रुप नोर्दन रीजन के सचिव सिद्धार्थ जैन, आई डी सी एस

जैन भी मौजूद रहे। इस सामाजिक कार्य के संयोजक मनीष बिलाला, पदम सोगानी, संजय जैन अकोड़ा, ग्रुप के सह सचिव महेंद्र जैन, कोषाध्यक्ष सुकेश काला सहित कार्यकारिणी सदस्य प्रमोद पाटनी, विजय जैन, संजय गोधा, एवं ग्रुप के बहुत से सदस्य उपस्थित रहे सभी ने जानकारी लेने मे रूचि दिखाई।

महावीर इंटरनेशनल में स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित

जयपुर. शाबाश इंडिया। रविवार दिनांक 18 अगस्त को जनता कालोनी स्थित महावीर इंटरनेशनल में स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक की रक्तदान वाहिनी में स्वर्गीय श्री आशीष नवलखा की सातवीं पुण्यतिथि पर रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर संयोजिका श्रीमती ज्योत्सना नवलखा ने बताया कि यह शिविर आशीष जी की पुण्यतिथि पर प्रतिवर्ष लगाया जाता है। जिसमें उनके परिजन व मित्र रक्तदान करते हैं। इस शिविर में 28 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। इस अवसर पर अमित जैन, निलेश छाजेड, श्वेता जैन, सम्यग, कशिश, अनुष्का उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्वास्थ्य कल्याण ग्रुप के चेयरमैन डाक्टर एस एस अग्रवाल ने इस पुनित आयोजन के लिए नवलखा परिवार का आभार व्यक्त किया व सभी से अपील की कि अपने परिजनों की पुण्यतिथि व जन्म दिन को रक्तदान शिविर लगा कर श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। इसके लिए स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक की रक्तदान वाहिनी उपलब्ध है।

श्रमण संस्कृति में रक्षा बंधन

श्रमणत्व रक्षा संकल्प दिवस-रक्षा बंधन पर्व

मुनिराजों की रक्षा का दिवस-धर्म रक्षा व वात्सल्य का पर्व

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा यानि रक्षाबंधन के दिन मुनिराज विष्णु कुमार ने वामन का वेष धारण कर राजा बलि से भिक्षा में तीन पैर धरती मांगी और तीन पग में ही सारा संसार नाप कर 700 मुनियों की रक्षा की और राजा बलि को देश से निकाल दिया। इसी पर्व को जैन समाज एक दूसरे की रक्षा के पर्व या वात्सल्य पर्व के रूप में मनाता आया है। जैन ग्रंथों के अनुसार, उज्जयिनी में श्रीधर्म नाम के राजा के चार मंत्री थे - बलि, बृहस्पति, नमुचि और प्रह्लाद। इन मंत्रियों ने शास्त्रार्थ में पराजित होने के कारण श्रुतसागर मुनिराज पर तलवार से प्रहार का प्रयास किया तो राजा श्रीधर्म ने उन्हें देश से निकाल दिया। चारों मंत्री अपमानित होकर हस्तिनापुर के राजा पद्म की शरण में आ गये। इन्ही दिनों कुछ समय बाद मुनि अकंपनाचार्य 700 मुनि शिष्यों के संग हस्तिनापुर पहुंचे।

शास्त्रार्थ में पराजित बलि ने मुनियों पर किया उपसर्ग

बलि को अपने अपमान का बदला लेने का विचार आया। उसने राजा से वरदान के रूप में सात दिन के लिए राज्य मांग लिया। राज्य पाते ही बलि ने मुनि तथा आचार्य के साधना-स्थल के चारों तरफ आग लगवा दी। धुएं और ताप से ध्यानस्थ मुनियों को अपार कष्ट होने लगा, पर मुनियों ने अपना धैर्य नहीं तोड़ा। बलि राजा ने मुनिराजों पर घोर उपसर्ग किया था और मुनिराजों का आहार-विहार-निहार तक बंद हो गया था, चारों ओर जलाये चर्म की बदबू और धुएं से उनके गले छिल गए थे। वे 700 मुनिराज इस भयंकर उपसर्ग को आत्म साधना के बल पर समता से सहन करने का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक यह कष्ट दूर नहीं होगा, तब तक वे अन्न-जल का त्याग रखेंगे। वह दिन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा का दिन था। मुनियों पर संकट जानकर मुनिराज विष्णु कुमार ने वामन का वेश धारण किया और बलि के यज्ञ में भिक्षा मांगने पहुंच गए। उन्होंने बलि से तीन पग धरती मांगी। बलि ने दान की हामी भर दी।

विष्णु कुमार ने उपसर्ग से की मुनियो की रक्षा

विष्णु कुमार ने विक्रिया ऋद्धि से शरीर को बहुत अधिक बढ़ा लिया। उन्होंने अपना एक पग सुमेरु पर्वत पर, दूसरा मानुषोत्तर पर्वत पर रखा और अगला पग स्थान न होने से आकाश में डोलने लगा। सर्वत्र हाहाकार मच गया। बलि के क्षमायाचना करने पर मुनिराज अपने स्वरूप में आए। इस तरह हस्तिनापुर में सात सौ मुनियों की उपसर्ग से रक्षा हुई। सभी ने परस्पर रक्षा करने का बंधन बांधा। यह पर्व अकंपनाचार्य आदि 700 मुनिराजों की रक्षा का दिवस होने से वात्सल्य पर्व कहलाता है।

एक दूसरे की रक्षा के संकल्प के लिए बांधा रक्षा सूत्र

सन्तों की रक्षा की स्मृति में रक्षा-बंधन का त्योहार श्रमण संस्कृति में आज तक मनाया जा रहा है । इस दिन साधु संतों तथा एक दूसरे की रक्षा के संकल्प के लिए धागे बांधे जाते है तथा मंदिरो में विधान पूजन के साथ सात सो मुनिराजो की पूजन कर अर्घ्य चढ़ाये जाते है । यह दिन जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांस नाथ का निर्वाण दिवस भी है । समाज जन द्वारा रक्षा बंधन पर्व के दिन निर्वाणोत्सव भी भक्ति भाव के साथ मनाया जाता है।

जयपुर में सन्तों के सानिध्य में होंगे विधान पूजन

इस दिन जयपुर में सन्तों के सानिध्य में थडी मार्केट, मीरा मार्ग, कीर्ति नगर, वरुण पथ, बरकत नगर, दुर्गा पुरा , पदमपुरा आदि स्थानों पर रक्षा बंधन पर्व व मुनि विष्णु कुमार की पूजन के बाद उपसर्ग विजेता सात सो मुनिराजो को नमन करते हुए अर्घ्य समर्पित किए जाएँगे तथा मंदिर जी में देव शास्त्र गुरु के समक्ष रक्षा सूत्र कलाई पर बांधे जाएँगे । मंदिरो में मुनियों की भक्ति में भक्ति संध्या जैसे कई कार्यक्रम आयोजित होंगे। पार्श्वनाथ मंदिर सोनियांन, जनकपुरी, चूल गिरी, जग्गा की बावड़ी, सांवला जी आमेर , नटाटा सहित कई मंदिरों में विशेष कार्यक्रम होंगे।

आलेख : पदम जैन बिलाला
जनकपुरी - जयपुर

700 मुनियों की रक्षा का महा पर्व है रक्षा बंधन

धर्म रक्षा का पर्व है रक्षा बंधन, आज ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक

संकलन
भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर

जैन धर्मावलंबियों द्वारा एक दूसरे का आदर करने, सहायता करने, सुरक्षा करने, संरक्षण प्रदान करने की भावना से मनाया जाता है रक्षाबंधन का पर्व। जैन धर्म के 19 वें तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ स्वामी के समय में हस्तिनापुर में महापद्म नामक चक्रवर्ती का राज्य था ।उनकी रानी लक्ष्मी मति और दो पुत्र विष्णुकुमार और पद्म थे।

राजा महापद्म एवं राजकुमार विष्णु कुमार द्वारा दीक्षा ग्रहण

जब राजा महापद्म को सांसारिक भोगों के प्रति वैराग्य हुआ साथ ही दीक्षा लेने का विचार किया और राजा ने अपना राज्य अपने बड़े पुत्र को देने का निश्चय किया, तो विष्णु कुमार ने राज्य लेने से मना कर दिया। विष्णु कुमार ने अपने पिता से पूछा कि आप यह चक्रवर्ती का पद, छह खंड का साम्राज्य, पूरा भरत क्षेत्र क्यों छोड़ रहे हो? तब राजा महापद्म ने कहा कि अब मैं जान गया हूँ कि इस संसार में सार नहीं है ।तत्वज्ञानी विष्णु कुमार ने पूंछा कि जब इस संसार में कोई सार नहीं है और आप स्वयं भी जब इस संसार को छोड़ रहे है, तो क्या आपको इस तरह की असार वस्तु को अपने बेटे को भेंट करना चाहिए ? जो सच्चे पिता होते हैं, वो अपने बेटे को अच्छी चीज ही देते हैं पिता से कहा कि इस असार संसार से मुझे भी अब वैराग्य हो गया है और स्वयं भी दीक्षा लेने की अनुमति मांगी ।तब राजा महापद्म ने अपने छोटे पुत्र पद्म को पूरा राज्य दे दिया फिर राजा महापद्म तथा उनके सुपुत्र विष्णु कुमार ने जाकर सागरचन्द्र आचार्य से दीक्षा ले ली।

शीघ्र ही महापद्म मुनिराज ने घातिया कर्मो को नष्ट कर केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया और फिर मोक्ष में चले गये

लेकिन मुनि विष्णु कुमारजी घनघोर तपस्या में लीन रहे तपस्या करते-करते उन्हें बहुत सी ऋद्धिया प्राप्त हो गयी। अकंपनाचार्य का सात सौ मुनि शिष्यों के साथ ससंघ उज्जयिनी नगरी में प्रवेश एक दूसरी घटना क्रम में अवन्ती देश की उज्जयिनी नगरी में राजा श्री वर्मा राज्य करते थे उसके यहाँ चार मंत्री थे बलि, ब्रहस्पति, प्रह्लाद और शुक्र। इन चारो की धार्मिक मान्यताये राजा से अलग प्रकार की थी एक बार परमयोगी दिगम्बर जैन मुनि अकंपनाचार्य अपने सात सौ मुनि शिष्यों के साथ ससंघ उज्जयिनी नगरी आए। तब उज्जयिनी के राजा और सारी प्रजा अष्ट द्रव्य का थाल सजा कर अत्यंत उत्साहपूर्वक मुनिराजो के दर्शन के लिए निकलती है, उसी समय मुनिश्री अकंपनाचार्य को अपने अवधिज्ञान से पता चला जाता है कि इस राज्य के सभी मंत्री दूसरे धर्म को मानने वाले हैं, इसलिए इस राज्य में किसी भी तरह का किसी से भी वातार्लाप, चर्चा या संपर्क मुनिसंघ के हित में नहीं है इसलिए उन्होंने सारे संघ को मौन धारण करने का आदेश दे दिया ।

मंत्रियों द्वारा राजा को भड़काना

जब राजा और प्रजा ने वहां पर जाकर वंदना करने के पश्चात मुनिराजों से निवेदन किया कि हे ज्ञानवान गुरुवर, हमें धर्म का उपदेश दीजिये, जिससे हम अपने सम्पूर्ण जीवन को सफल बना सके, लेकिन किसी भी मुनिराज ने कोई भी जवाब नहीं दिया, क्योकि सब साधु मौन थे, प्रयास करने पर भी किसी भी मुनिराजों ने अपना मौन नहीं खोला, तब इन चारों मंत्रियो ने राजा को बोला कि अरे ये मुनिराज तो निरे अंगूठे-छाप हैं इनको कुछ आता नहीं है अगर इन मुनिराजो को कुछ आता होता, तो ये ऐसे मौन नहीं रहते बस जैन साधु बनने पर इनको सम्मान, भोजन आदि मिल जाता है यही कारण इनकी जैनेश्वरी दीक्षा लेने का है इसके सिवा कोई और कारण नहीं है, आप इनसे धर्म का स्वरुप पूछ रहे हैं लेकिन ये सब मुनि जानते हैं कि इनको कुछ नहीं आता है हे राजन, जब आपके साथ हमारे सरीखे इतने विद्वान-मंत्री हैं, तो ये कैसे कुछ बोले? अतः ये चुप ही रह रहे हैं और कुछ नहीं बोल रहे हैं इसके बाद राजा के साथ वे सब नगर की और लौटने लगे तब रास्ते में इसी संघ के एक श्रुतसागर नामक मुनिराज को आता देख, इन चारो मंत्रियों में से एक मंत्री ने कहा कि अरे देखो, कैसा जवान बैल चला आ रहा है ।इन मुनिराज को पता नहीं था कि आचार्य श्री ने सबको मौन रहने आदेश किया है,अतः इन मुनिराज ने मौन व्रत नहीं लिया था इसलिए इन्होंने ह्रस्यातद्व शब्द बोला, तो राजा को लगा ये साधु तो मौन नहीं है, तब राजा ने इसका अर्थ पूछा । तब मुनिराज बोलते हैं कि इस संसार में भ्रमण करने वाला जीव कभी बैल योनी में भी उत्पन्न हो जाता है, बैल में जवानी की दशा भी बनती है, तो उस भूतपूर्व अवस्था से आपके मंत्रियों ने सही कहा है तो एक मंत्री ने कहा की क्या आप पुनर्जन्म मानते है ? किसने देखा है पुनर्जन्म? जो आँखों से नहीं देखा जा सकता, वो सत्य कैसे हो सकता है? तब मुनिराज तत्काल उत्तर देते हैं कि तुम्हारे माता, पिता की विवाह विधि हुई थी क्या वो तुमने देखी थी? वो मंत्री कहता है कि हाँ हुई थी, तब मुनि बोलते हैं कि तुम कैसे कह सकते हो कि विवाह विधि हुई थी तो मंत्री बोलता है कि हुई तो थी, लेकिन तुम तो बोल रहे हो कि जो आँखों से दिखता है, वही सच होता है तो मंत्री बोलता है कि मैंने सुना है तो फिर मुनि बोले कि फिर तुम्हारी पहली बात झूठी सिद्ध हो रही है ये सुनते ही उस मंत्री को कुछ जवाब समझ में नहीं आया, तो फिर मुनिराज बोले कि जो हम आत्मा, परमात्मा की धारणा को लेकर चल रहे हैं, वो भी हमने सुनी है, हमने हमारे सद्गुरु से, उन्होंने गणधर परमेष्ठी से, गणधर परमेष्ठी ने उनके गुरु तीर्थंकर भगवान्-झ सर्वज्ञ से ये बात सुनी है इस तरह अनादिकाल से आजतक यह मान्यता चली आ रही है इसलिए हम भी उस पर अविश्वास नहीं करते हैं इस प्रकार इन मंत्री के पास अब कोई जवाब नहीं था, अतः ये चारो मंत्री उन मुनिराज से परास्त हो गए। जो ज्ञानी महात्मा हैं, जिनको चारो अनुयोगो का ज्ञान है, उन आत्मज्ञानी महापुरुष को कोई जीत नहीं सकता है वाद-विवाद में उनको कोई पराजित नहीं कर सकता है जो लोग थोडा बहुत पढ़ कर तर्क-वितर्क करने लग जाते हैं, वो अपनी ही बात से खुद ही पराजित हो जाते हैं इस तरह स्यादवाद के धारक मुनिराज ने सबको पराजित कर दिया और वो सब मंत्री गण परास्त होकर म्लान मुख हो चले जाते हैं इसके बाद मुनि श्रुतसागर जी आचार्य अकम्पनाचार्य जी के पास जाते है तथा उनको सब मंत्रियों से हुए समस्त वातार्लाप को बता देते हैं कि रास्ते ये घटना हुई तो मुझे थोड़ा सा शास्त्रार्थ करना पड़ा और वो परास्त हो गये तब वे आचार्य बोलते हैं कि तुमने मुनि संघ के ऊपर संकट ला दिया है और पुनः उसी स्थान पर चले जाने व कायोत्सर्ग मुद्रा में मौन होकर खड़े हो जाने को कहा। अब इस संकट से बचने का एक मात्र उपाय यही हो सकता है ।इस तरह गुरु की आज्ञा की अनजाने में जो भूल हो गयी है, उसका भी प्रायश्चित हो जायेगा। तब वे मुनि श्रुतसागर आचार्यश्री को नमस्कार कर चले गए और उसी स्थान पर जाकर कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े हो गये उधर उन चारो मंत्रियो ने बैठक में विचार किया कि इन साधुओं के कारण हमारी ऐसी बदनामी हुई है, अतः हम अब इन सब मुनियों को मार डालेंगे, तो दूसरा बोला कि सब मुनियों की हत्या करना व्यर्थ है अंत में निर्णय यह निकलता है कि जिस मुनि के कारण हमको इतनी बदनामी हुई है, उसी मुनि की हत्या करनी चाहिए अतः अब हम रातो-रात उस मुनि को मार डालेंगे फिर चारो मंत्रीगण रात को उसी मार्ग से निकलते हैं रास्ते में चांदनी रात में श्रुतसागर मुनिराज को कायोत्सर्ग मुद्रा में देख कर पहचान लेते हैं और सोचते हैं कि चलो अच्छा हुआ, हमारा दुश्मन तो यही खड़ा है चारो मंत्रियों ने तलवार उठा ली और जैसे ही वो मारने को होते हैं, तब उस जगह का वन देवता उनके हाथो को कीलित कर देता है, जिससे उनके शरीर जकड़ जाते हैं और वे रात भर इसी मुद्रा में खड़े रह जाते हैं

राजा द्वारा चारों मंत्रियों को देश निकाला

सुबह जब जनता मुनिराजो को वंदना के लिए निकलती है, तब रास्ते में इन दुष्टों को मुनिराज को मारने के लिए तलवार उठाये कीलित मुद्रा में देख कर अत्यंत क्रोधित होकर राजा को बताती है तब राजा बहुत कुपित होता है कि इन दुष्टों ने इतना नीचा कार्य करने की कोशिश की फिर राजा उन चारो मंत्रियो को अपमान पूर्वक देश निकाले का दंड देकर अवन्ती देश से निष्काषित कर देते हैं, इसी बीच हस्तिनापुर के राजा पद्म पर सिंहबल नामक राजा चढ़ाई करता है, तब ये चारो मंत्री अपने छल-बल से सिंहबल राजा को बंदी बनाकर राजा पद्म के सामने ले आते हैं तब राजा पद्म बहुत प्रसन्न होता है, और बोलता है कि तुम सभी को मैं मंत्री बनाता हूँ और साथ में तुमको अगर कोई वरदान मांगना हो, तो मांग लो।

मंत्री बलि अकंपनाचार्य सहित 700 मुनियों पर उपसर्ग

बलि मंत्री बोला, जब वक़्त होगा तब मागेंगे और इस तरह वो सभी हस्तिनापुर राज्य के मंत्री बन जाते हैं। एक बार इस राज्य में भी अकम्पनाचार्य आदि सात सौ मुनिराजो का संघ चातुर्मास के लिए आता है अब जैसे ही इन मंत्रियों को इस बात का पता चलता है, वे सभी राजा पद्म के पास जाते हैं और राजा से वरदान में सात दिन का राज्य मांगते हैं अब ये चारो मंत्री राजा बनते ही मुनिसंघ के चारो ओर एक बाड़ी लगा देते है फिर उसमे अग्नि जलाकर यज्ञ प्रारंभ करते हैं और लकड़ी आदि जलाने लगते हैं तब चारो ओर बहुत सारा धुवाँ फैल जाता है ।यह धुवां मुनिराजों के गले, नासिका में चले जाने से मुनिराजो को अत्यंत कष्ट हो जाता है लेकिन फिर भी वो सभी मुनिराज समता धारण कर वही पर अपने आत्म चिन्तन में लीन हो जाते हैं। -निरंतर

'रक्षाबंधन'-आत्मरक्षा, जीव रक्षा और जिन शासन रक्षा की प्रेरणा देता है...

पदमचंद गांधी @ 9414967294

मानव ने अपने अस्तित्व के साथ अपनी सुरक्षा को सर्वोपरि माना है ' सुरक्षा की पृष्ठभूमि पर उसने रिश्तों के उपहार को भी महत्वपूर्ण माना है , जिसके आश्रय में वह आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करता है ' संबंधों की मजबूत परंपरा मानवता की संवाहक है ' अपनी सुरक्षा का वह अनकहा संकल्प है जो उसकी सुरक्षा के दायित्व का बोध जागृत रखता है ' रक्षा सूत्र हमें यही संदेश देता है की मंगल के लिए मयार्दाओं का पालन जरूरी है। त्योहारों का मूल संदेश एकता , भाईचारा बढ़ाने के साथ-साथ आत्मरक्षा , जीव रक्षा एवं जिन शासन रक्षा की प्रेरणा देता है ' यह पर्व नारी के प्रति भी पवित्र भावना की प्रेरणा तो देता ही है ,साथ-साथ उसे शक्ति रूप में स्वीकार करने की शिक्षा भी देता है ' शास्त्र साक्षी है ,इंद्र को देवासुर संग्राम में विजय तभी मिली जब उनकी पत्नी देवी शचि ने पवित्र भाव से उन्हें रक्षा सूत्र बांधा, उसी दिन श्रावण मास की पूर्णिमा थी ' अर्जुन ,शिवाजी , छत्रसाल आदि महापुरुषों की सफलता के पीछे भी रक्षा सूत्र का ही हाथ रहा है। **स्व-रक्षण की प्रेरणा:-** राखी के पीछे जो गहरे भाव हैं, मूल विचार है, पर्व की भावना है , वह अति - महत्वपूर्ण है ' इतिहास गवाह है, अपने शील की रक्षा के लिए सती सुभद्रा ने कच्चे धागों से चलनी को बांधकर कुएं से पानी निकालकर बंद गेट के दरवाजे पर पानी छिड़कने से चंपा नगरी के चारों दरवाजे खुल गए ' यह है कच्चे धागे की ताकत ! कच्चे धागे एक संकल्प शक्ति है, रक्षण का भाव है ' स्व- रक्षा में ही सर्व - रक्षा की नींव है और सर्व - रक्षा में ही स्व - रक्षा हो जाती है ' स्व - रक्षा से आत्मा निर्मल बनती है ' मेरी आत्मा 18 पापों से मालिन नहीं हुए , कसायों से मालिन नहीं होवे , मेरी आत्मा शुद्ध , निर्मल , एवं पवित्र बने ऐसी उत्कृष्ट भावना ही साधक के मन में स्वत ही जीव रक्षा के भाव उत्पन्न हो जाते हैं ' जिससे उसके मन में करुणा , दया , संवेदनशीलता आने से वह सभी जीवो के प्रतिरक्षण भाव रखने लगता है ' रक्षा बंधन केवल बहन की रक्षा के संकल्प तक सीमित नहीं है, इसमें करुणा, सद्भावना का भाव, रक्षण का भाव संपूर्ण मानव जगत एवं सभी जीव योनि के लिए होता है ' अतः 'स्व'-रक्षण में ही 'सर्व' रक्षण का हित समाविष्ट है। सच्चा प्रेम ,सच्ची करुणा शक्ति, परिवार तक सीमित नहीं होती वह सर्वांग होती है 'वसुदेव कुटुंबकम' की धारणा पर होती है , सबका हित सोचने वाली होती है ' मेवाड़ की रानी कर्मवती पर बहादुर शाह जफर द्वारा आक्रमण कर दिया ' वीरता से शत्रु का सामना किया ' बादशाह हुमायूं को राखी भेज कर राज्य रक्षा का कार्य किया ' हुमायूं की सेना ने बहादुर शाह जफर के विरुद्ध युद्ध कर राज्य की रक्षा की ' जो सर्व- रक्षा का उदाहरण बना।

जीव रक्षण की प्रेरणा:- सच्चा प्रेम करने वाला दूसरों के दुख में स्वयं को देखा है , दूसरों की पीड़ा स्वयं की लगने लगती है ' आगम स्पष्ट करते हैं, मेघ कुमार का जीव हाथी के रूप में आग लगने पर जंगल के सभी जीव समतल मैदान में एकत्रित होने पर कुछ जगह शेष नहीं बची , एक खरगोश भी अपने जीवन रक्षा के लिए आया , उसी समय हाथी के पांव में खुजली चली और ऊपर उठाया , जैसे ही पांव ऊपर उठाया खरगोश वहां पर आ गया ' उसे बचाने के लिए हाथी ने पांव इसलिए नीचे नहीं रखा की कही खरगोश मर न जाए ' यह थी करुणा , जीव रक्षा ! ऐसी प्रेरणा यह पावन पर्व देता है ' शास्त्र बोलते हैं मेरे सभी मित्र हैं ,मेरे कोई शत्रु नहीं है ' इसी भाव से जीव रक्षा होती है। सच्ची करुणा क्या होती है ,जीव रक्षा कैसे होती है , सच्ची घटना स्पष्ट करती - एक कलाकार ने गायिका लता मंगेशकर को भोजन के लिए आमंत्रित किया लता जी वहां पर पहुंचती है तो वहां पर बहुत सारी चिडियायों की का क्रदन भरी आवाज जोर-जोर से सुनती है ' सोचा यहां पर इतनी सारी चिड़ियों की एक साथ आवाज क्यों आ रही है ? पता लगाया , जानकारी मिली आज का स्टैंडर्ड नाश्ता रखा गया है ,उसे नाश्ते के लिए इन चिड़ियाओं का उपयोग होने वाला है ' चिड़िया की दुख भरी पीड़ा को सुनकर लता जी का मन करुणा से भर आया ' तुरंत लता जी ने निमंत्रण करने वाले के पास गई और अपने पल्लू से साड़ी फाड़ कर उनकी कलाई पर बांध दिया और प्रार्थना की भाई साहब स्टैंडर्ड नाश्ते में चिड़ियों का उपयोग नहीं करना, यह मेरा निवेदन है ' यह जो संगीत आप सुन रहे हैं, वह उनके करुणामय भाषा , जो आप समझ नहीं रहे हैं, वह उनकी पीड़ा है, वह भी जीना चाहती है उड़ना चाहती है, इनका वध मत कीजिए ' भाई साहब ने उनकी बात स्वीकार कर सभी चिड़ियों को आजाद कर दिया ' यह है जीव रक्षा, करुणा और धागे का महत्व। एक पिता चिड़िया का पिंजरा खरीद कर ले आए तीन-चार चिड़िया उसमें थी ' घर पर बेटी ने उस पिंजरे में स्वयं को देख आंखें नम हो गई ' उम्र कम थी ,लेकिन पिता को कहा पापा ऐसा लग रहा है इस पिंजरे में मैं कैद हो रही हूं, मेरी आत्मा तड़प रही है, मैं बाहर उड़ना चाहती हूं , लेकिन आपने मुझे इसमें बंद कर रखा है ' यह पीड़ा है ,दूसरों की , जिसे इस छोटी बालिका ने महसूस किया ' पिता को समझ आ गया चिड़ियों को आजाद कर दिया।

जिन शासन रक्षण की प्रेरणा:- रक्षाबंधन का पर्व जिन शासन की रक्षा की प्रेरणा देता है ' इस दिन श्रावक श्राविका स्थानक में पाट के राखी बांधकर संकल्प करती है जिन शासन की रक्षा के लिए , व्रत नियम के पालन के लिए, सद्भावना , मैत्री विकसित करने के लिए तथा अहिंसा पालन करने के लिए ' संयम में रहना, मयार्दाओं में रहना ,अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं तथा सदेव धर्म की अनुमोदना करने का भाव जगाने की प्रेरणा यहीं पावन पर्व देता है ' आगमों में वर्णन आता है आचार्य अकंपनाचार्य अपने 700 शिष्यों के साथ हस्तिनापुर पहुंचते हैं तथा कथा के अनुसार उज्जैन के राजा श्री वर्मा के चार मंत्री बाली, नमुचि, प्रहलाद और बृहस्पति ' जो धर्म विरुद्ध थे श्रुतमुनि संत के साथ घृणित कृत्य के करण उन्हें देश निकाला दे दिया ' वहां से चलकर वे हस्तिनापुर के राजा महपद्मराज के प्रिया बन गए ' उनके द्वारा राजा के अनुकरणीय कार्य से सिंह बल को बांधने के कारण कारण 7 दिन का राज्य मांग लिया ' पदम कुमार ने सहजता से बिना षड्यंत्र जाने राज्य दे दिया ' उस अवधि में आचार्य के 700 शिष्यों को करने का षड्यंत्र रचा गया, जिसकी जानकारी राजा को हो गई ' इस समय उनके छोटे भाई जो संयमी साधु हिमालय में साधना के लिए चले गए तथा साधना में वैक्रियलब्धि उपलब्ध कर ली ' इस षड्यंत्र के निवारण हेतु उनके पास दूत भेज सारी स्थिति की जानकारी दी ' तब मुनि विष्णु कुमार ने अपनी लब्धियों का उपयोग कर वामन ब्राह्मण का वेश धारण कर बाली के यज्ञ मंडप में जा पहुंचे ' उनके विद्या मंत्र उच्चारण के प्रभाव से बाली ने उपहार देने की बात कहीऔर ब्राह्मण ने तीन पाउंडे पृथ्वी की जमीन मांग ली ' जब पहले पाउंड को मापा गया तो सुमेरु पर्वत पर दूसरा मानुष्यउत्तर पर्वत पर और तीसरा पैर रखने की जगह नहीं ' उसके प्रभाव से सारी पृथ्वी कांप गई , पर्वत हिल गए ,समुद्र ने मयार्दा तोड़ दी, देव और ग्रहों के विमान टकराने लगे ' सभी देव विष्णु कुमार के पास आए बाली को बांधकर ले उसे एहसास कराया ' इस प्रकार मुनि विष्णु कुमार ने संघ के जिन शासन उपद्रव को दूर करके 700 साधुओं की रक्षा की। एक सेठ जी जो जैन थे उनका 10 लाख का पेमेंट एक व्यक्ति में अटका हुआ था ' बार-बार तकादा करने पर भी नहीं मिला ' पता किया तो वह व्यक्ति हॉस्पिटल में भर्ती था ' सेठ जी अपने दस्तावेज तैयार कर अस्पताल पहुंचे और उस व्यक्ति से मिले ' दस्तावेज उस व्यक्ति को देकर कहते हैं ,आपका सारा पेमेंट में मुझे प्राप्त हो गया है, आप चिंता नहीं करें और भुगतान की रसीद आपको देता हूं ' वहां से चलकर काउंटर पर आए संपूर्ण बिल का पेमेंट कर दिया' इस प्रकार असहाय की सहायता कर जिन शासन के सच्चे श्रावक का परिचय दिया ' यह है इस पर्व का महत्व महत्व। आज भी ब्राह्मण लोग घर-घर जाकर अपने जजमानों के रक्षा सूत्र बांधते हैं जिसके पीछे धारणा यही है की बाली को बांध दिया है अर्थात अपनी मयार्दाओं में रहना है तथा धर्म की रक्षा करनी है। आज इस पर्व का बाजारीकरण हो गया है छिपी हुई मूल भावनाओं का मूल्य में आकलन होने लग गया है ' इस अवधारणा से परे हटकर हमें इस पर्व की मूल भावनाओं को समझ कर अपने भीतर रक्षण का भाव जागृत करना ही पर्व को मानना मानना है ' यही रक्षाबंधन की पावन प्रेरणा भी है।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

मरुधर केशरी मारवाड़ के सच्चे जोगी थे: युवाचार्य महेंद्र ऋषि द्वय महापुरुषों की जन्म जयंती मनाई गई

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नेई। एएमकेएम जैन मेमोरियल सेंटर में श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषि जी महाराज के सान्निध्य में रविवार को द्वय महापुरुष मरुधर केसरी मिश्रीमलजी व प्रवर्तक रुपचंदजी महाराज की जन्म जयंती एकासन दिवस के रूप में मनाई गई। इस दौरान बड़ी संख्या में गुरुभक्त उपस्थित थे। युवाचार्य महेन्द्र ऋषि जी महाराज ने विशाल धर्मसभा मे श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज जिनकी जन्म जयंती संपूर्ण देश में गुरुभक्तों द्वारा मनाई जा रही है, उन महापुरूषों की दया, अहिंसा, परमार्थ से देश की दशा सुधारने में अहम्योगदान है। पुण्यशाली है वे सभी, जिन्हें ऐसे महापुरुषों के प्रत्यक्ष दर्शन, आशीर्वाद, सेवा का अवसर मिला। श्रमण संघ के निर्माण में मरूधर केशरी की नींव के पत्थर जैसी भूमिका थी। उन्होंने कहा नींव का पत्थर वही बन सकता है, जिसके अंदर कुबार्नी देने का जज्बा हो। मरुधर केशरी ने जिनशासन को संघ के रूप में समृद्ध होने का वरदान दिया। पहले हम छोटे-छोटे संप्रदायों में जी रहे थे, उन्होंने हमें एक बड़ा मंच दिया। उन्होंने हिन्दी, मारवाड़ी भाषा में 50,000 से अधिक पृष्ठों में रामायण, महाभारत जैसे विशाल महाकाव्य, दोहा, कविता आदि कुल 181पुस्तकों का सर्जन किया। युवाचार्य प्रवर ने कहा मरुधर केशरी मारवाड़ के सच्चे जोगी थे। मरुधर केसरी की वाणी में एक जबरदस्त ओझ था। उनके एक शब्द से बड़ा कार्य भी हो जाता था। उन्होंने बिलाड़ा की बाणगंगा नदी में मछलियों के नाम पर हो रही हिंसा को रुकवाया। उनकी प्रेरणा से 300 से ज्यादा छात्रावास, चिकित्सालय, गौशाला, बकराशाला, वृद्धाश्रम, विद्यापीठ का निर्माण हुआ। उन्होंने कहा आप अत्यंत भाग्यशाली रहे हैं जो राजस्थान में उनका सान्निध्य मिला। उन्होंने जो शिक्षा दी है, वह आज हम भूलते जा रहे हैं। हमें संकल्प करना है कि हम उनके श्रावक के रूप में उनके उपकारों को कभी नहीं भूलेंगे। हम प्रेरणा लें कि हमारी आस्था, श्रद्धा मजबूत हो। उन्होंने कहा श्रद्धा के सामने कोई तर्क नहीं होना चाहिए। गुरूदेव का दिया हुआ संघ हमारे लिए सर्वोपरि है। उसको संभालने की जिम्मेदारी आपकी है। उन्होंने समृद्ध रहने का जो उपाय दिया, वह हम भूलें पनहीं। संपत्ति को सद्कार्यों में खर्च करने की जो प्रेरणा उन्होंने दी है, वह गतिशील हो। उन्होंने कहा दुआ बहुत दूर तक कार्य करती है। रुपचंदजी महाराज के बहुत उपकार स्थानकवासी संघ पर है। उन दोनों में गुरु-शिष्य की तरह प्रेम था। हम गुरु का स्मरण कर उनके गुणों को ग्रहण करें। महासती दिव्ययशाश्री जी ने कहा कि महापुरुषों का गुणगान करने से कर्मनिर्जरा होती है। हमारे अंदर की नकारात्मकता दूर होती है। श्रमण संघ को जयवंत रखने का उनका उद्देश्य था। अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी कांफ्रेंस के अध्यक्ष आनंदमल छल्लाणी ने कहा कि द्वय महापुरुषों ने प्राणीमात्र के कल्याण के कार्य किए। व्यापक व उदार दृष्टिकोण के कारण वे आज भी जन- जन की श्रद्धा का केंद्र बने हुए हैं। वे वचनसिद्ध व पशु- पक्षी सेवा के अनन्य पक्षधर थे। वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ तमिलनाडु के मंत्री धमीचंद सिंघवी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज दोनों गुरुदेव की जन्म जयंती मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनकी कृपादृष्टि सभी भक्तों पर बनी रहे। चातुर्मास सुंदर ढंग से गतिमान है। आपका सहयोग हमेशा मिलता रहे, यही आकांक्षा है। उन्होंने नवीन अन्नदान योजना में जुड़ने का आग्रह किया। इस मौके पर महासंघ द्वारा केरल, पांडीचेरी व तमिलनाडु के सौ संघों की डायरेक्टरी का विमोचन किया गया। संयोजक महावीर चंद रांका, मरुधर केशरी रुप रजत की ओर से शांतिलाल सिंघवी व महावीर पगारिया ने अपने विचार व्यक्त किये। माम्बलम स्थानकवासी जैन संघ के अध्यक्ष डॉ उत्तमचंद गोठी ने कहा द्वय महापुरुषों के गुणों का वर्णन शब्दों में नहीं पिरोया जा सकता है। जीवदया कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न गौशालाओं व चेरिटेबल चिकित्सालयों को चैक बांटे गए। मांगीलाल देसरला ने भावपूर्ण काव्यपाठ किया। मरुधर केशरी महिला मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। इस दौरान सुश्राविका अनिता बोकड़िया ने 33 उपवास की पचकावनी ली। आनंदराज खारीवाल व मनुबेन लोढ़ा ने क्रमशः 32 व 30 उपवास तथा उत्तमचंद सुराणा व विमलाबाई सिंघवी ने 16 उपवास आदि के युवाचार्य प्रवर से प्रत्याख्यान लिए। इसदौरान महावीर चंद कटारिया ने सभी के सहयोग से 71 लाख रुपयें की राशि 140 गौशालाओं मे वितरण की।

महावीर इंटरनेशनल वीरा धरा ने पुलिस थाने में मनाया रक्षाबंधन

कुचामन सीटी. शाबाश इंडिया। सबकी सेवा सबको प्यार जीवो और जीने दो के उद्देश्य वाली संस्था महावीर इंटरनेशनल वीर वीरा धरा द्वारा मेला, जुलूस, रेली, विशाल मीटिंगो हड़ताल मे घर परिवार से दूर रहकर आमजन की सुरक्षा व खुशहाली के लिए मुस्तेद रहकर व्यवस्था बनाने वाले पुलिस भाईयों को रक्षा बंधन पर डी एस पी अरविन्द विश्नोई, सी आई सुरेश चौधरी, रामलाल चौधरी, रामेश्वर अंगारा, रामदेव पुरी, बजरग लाल अन्य भाईयों को दीघार्यु उज्वल भविष्य की कामना के साथ रक्षा बंधन पर्व पर राखी बांधकर मुंह मीठा करवाती। वीरा सचिव शारदा वर्मा, कोषाध्यक्ष वीरा मंजू बडजात्या, वीरा विजयकोर बिडसर, वीरा सुनिता गगंवाल, वीरा सरला खटोड, अध्यक्ष वीर रामावतार गोयल, कोषाध्यक्ष वीर सुरेश जैन, वीर सुरेन्द्र सिह दीपुपरा, वीर नंदकिशोर बिडसर, वीर सोहनलाल वर्मा ने सहयोग किया। वीर सुभाष पहाड़िया ने सभी के प्रति घन्यवाद ज्ञापित किया। रिपोर्ट: वीर सुभाष पहाड़िया

सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुंसी (राज.) में भक्तामर विधान का आयोजन

गुंसी, निवाई. शाबाश इंडिया। प. पू. भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका रत्न 105 गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ गुंसी जिला - टोंक (राज.) में भगवान के दर्शनार्थ कोटा, निवाई, चाकसू, जयपुर, टोंक, मालपुरा आदि अनेक स्थानों से भक्तगण पहुंच रहे हैं। पूज्य माताजी के ससंघ सान्निध्य में प्रभु के मस्तकाभिषेक व जन्मदिन के अवसर पर राकेश नेवटा वाले मालपुरा परिवार ने श्री भक्तामर अनुष्ठान करवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। लगभग 300 से अधिक लोगों ने इस विधान में भाग लिया। बाहर से आये हुए अतिथियों का स्वागत - सत्कार चातुर्मास समिति द्वारा किया गया। पूज्य गुरु माँ के पाद - प्रक्षालन, वस्त्र भेंट, शास्त्र भेंट आदि का पुण्यार्जन भी नेवटा परिवार ने प्राप्त किया। तत्पश्चात गुरु माँ की पूजन भक्तों के द्वारा भक्ति मय संगीत लहरियों के साथ की गई। पूज्य गुरु माँ ने उपस्थित जनसमूह को आशीर्वाद देते हुए कहा कि-अपने जीवन में जब भी जन्मदिन मनाए तो ऐसे ही धर्म ध्यान, पूजा - विधान पूर्वक मनाओ। इसी से पुण्य का अर्जन होगा। माताजी ने कहा कि - सभी लोग क्षेत्र बनाने पर कहते है जंगल में कौन अभिषेक करेगा ? लेकिन आज देखिए जहाँ श्रावक नहीं करेगा तो देवता आकर करेंगे। कभी प्रभु की सेवा में विघ्न नहीं आता। श्रावक अपने धर्म को छोड़ सकते हैं लेकिन देवता नहीं। आज के श्रावक में श्रद्धा का अभाव है। जब तक भक्ति में स्वार्थ रहेगा और समर्पण नहीं होगा तो भक्ति का फल नहीं मिलेगा। जहां देवता करेंगे वहां श्रावक अपने आप आएगा क्योंकि आज के समय चमत्कार को नमस्कार है। इसलिए प्राचीन मुनियों के सिद्धांत अपनाओ नमस्कार करो तो चमत्कार अवश्य होगा।

आजादी का जश्न मनाएं, आओ घर-घर तिरंगा फहराएं: तुलसीराम राजस्थानी

रेल महा आंदोलन की प्रथम वर्षगांठ एवं नावा एकता दिवस पर हुआ भव्य काव्य गोष्ठी का आयोजन

मनोज गंगवाल. शाबाश इंडिया

नावा सिटी। उपखंड मुख्यालय पर रेल महा आंदोलन की प्रथम वर्षगांठ एवं नावा एकता दिवस के उपलक्ष में एक भव्य काव्य गोष्ठी का आयोजन सरस्वती काव्य कला मंच, नावां के तत्वावधान में मंगलवार को रामेश्वरम धाम मंदिर परिसर में किया गया। सरस्वती काव्य कला मंच के अध्यक्ष तुलसीराम राजस्थानी ने बताया कि काव्य गोष्ठी के मुख्य अतिथि विद्या भारती के संरक्षक ओमप्रकाश सोनी रहे व अध्यक्षता पेंशनर समाज के अध्यक्ष सुरेश गौड़ ने की। शिक्षाविद् श्रीमती मधु माथुर व पंडित शिवदत्त शर्मा कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कांसेड़ा के प्रधानाचार्य ललित कुमार शर्मा, मकराना के ख्यात नाम कवि कैलाश शर्मा व खारिया सरपंच डॉ. देवीलाल दादरवाल भी मंचासीन रहे। सभी अतिथियों का दुपट्टा, साफा बंधन व स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। काव्य गोष्ठी का आगाज मां सरस्वती की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलित व पुष्प अर्पित के साथ सीताराम प्रजापत द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ। पलाड़ा से पधारे कवि महेश सोकल ने सावन महीने पर कविता दिलों में नेह की बाती जलाने आ गया सावन की प्रस्तुति दी। युवा कवि महावीर शर्मा ने कविता तुम्हारे बिना मैं रह नहीं सकता की पेशकश कर तालियां बटौरी। मारोठ से पधारे कवि श्रवण गुर्जर ने जम्मू कश्मीर पर कविता पढ़ी। काव्य गोष्ठी में शामिल एकमात्र कवयित्री भावना बजाज ने सामाजिक सरोकार की कविता बदलाव करो खुद पर चिंतन करो की प्रस्तुति दी। शिक्षाविद् ललित कुमार शर्मा ने श्रृंगार रस पर होती हैं खुली छत पर चांद निहारने के लिए प्रस्तुत कर खूब वाहवाही लूटी। अशोक कुमार अटल ने भक्ति रस में सुन बजरंगी नहीं कोई साथी संगी भजन की प्रस्तुति देकर माहौल को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम में राजास से पधारे सबसे युवा कवि सुनील कुमावत ने दोस्ती पर कविता ऐ दोस्त तेरे बिना जीना कैसा की प्रस्तुति देकर खूब प्रशंसा पाई। सीताराम प्रजापत ने राजस्थानी में काव्यपाठ किया। मकराना के कवि कैलाश शर्मा ने केदारनाथ जल त्रासदी पर राजस्थानी कविता पालणहार प्रभु जाणकर घणी चढ़ाई जलधारा की प्रस्तुति देकर काव्य गोष्ठी को ऊंचाईयां प्रदान की। मनोज गंगवाल ने हाथ बढ़ाया जब-जब हमने दोस्ती के लिए व मैं तलाश कर रहा हूं ऐसे मौके का मेरी जिन्दगी मेरे शहर व देश के काम आ जाए की शानदार प्रस्तुति देकर जमकर वाह वाही लूटी व खूब तालियां बटोरी। कार्यक्रम का संचालन कर रहे तुलसीराम राजस्थानी ने

देश भक्ति से ओतप्रोत कविता आजादी का जश्न मनाएं, आओ घर-घर तिरंगा फहराएं की प्रस्तुति देकर सबको भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम में प्रदीप गौतम ने रामलीला मंचन की पुरानी याद को ताजा करते हुए अपनी प्रस्तुति दी तथा सत्यनारायण लढ़ा व नरेंद्रदेव टेलर ने भी अपनी स्वरचित पंक्तियां प्रस्तुत की। रेल महा आंदोलन की प्रथम वर्षगांठ एवं नावा एकता दिवस पर मंचासीन खारिया सरपंच डॉ.देवीलाल दादरवाल ने रेल महा आंदोलन के दौरान क्षेत्र वासियों द्वारा दिखाई गई एक जुटता की जमकर प्रशंसा की व सदैव एकजुट होकर कार्य करने पर बल दिया कार्यक्रम में शामिल अन्य अतिथियों ने भी एकता दिवस पर अपने विस्तृत विचार रखें ' इस दौरान रेल महा आंदोलन के अग्रणी एवं प्रणेता समाजसेवी मनोज गंगवाल का का कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों एवं गणमान्य नागरिकों द्वारा जोरदार स्वागत सम्मान किया गया ' इस अवसर पर सभी कविजन को दुपट्टा ओढाकर, स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में शामिल सभी आगंतुकों के लिए मंच की ओर से अल्पहार की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर नावा सोशियल सर्विस सोसाइटी के संस्थापक अध्यक्ष लुकमान शाह, सोसाइटी संयोजक व्याख्याता मदनलाल पिपलोदा, पगलिया वाले बाबा सेवा समिति संयोजक बाबूलाल दुबलदिया, कुमावत समाज अध्यक्ष सीताराम नागा, सुभाष सेवा समिति अध्यक्ष चंदूलाल सेन,स्टूडेंट क्लब संरक्षक मोतीराम मारवाल, क्लब संयोजक बाबूलाल बरवड़,महिला नेत्री अल्पना अग्रवाल,रामेश्वर धाम मंदिर पुजारी भरत जोशी,सेवानिवृत्ति तेजराज बोहरा,हरिप्रसाद जांगिड़, अध्यापक गौतम प्रसाद,अशोक टेलर, लक्ष्मीकांत पारीक आदि गणमान्य नागरिक मौजूद रहे ' इस दौरान कार्यक्रम में शामिल सभी आगंतुकों के लिए मंच की ओर से अल्पहार की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर काव्य गोष्ठी समारोह में पधारे सभी महानुभावो ने कार्यक्रम की जमकर प्रशंसा की व आयोजकों का आभार व्यक्त किया '

सटीक भविष्यवाणियां पर अंतरराष्ट्रीय भविष्यवक्ता पंडित रविंद्रचार्य सम्मानित

गाजियाबाद. शाबाश इंडिया। आई टी एस कॉलेज में केशव फाउंडेशन कारगिल युद्ध दिवस के 25साल पूरे होने के उपलक्ष में ज्योतिष के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर और सटीक भविष्यवाणियां करने पर अंतरराष्ट्रीय भविष्यवक्ता पंडित रविंद्रचार्य का किया सम्मान किया। सम्मान कैबिनेट मंत्री नरेंद्र कश्यप उत्तर प्रदेश सरकार ने दिया। कंधार विमान अपहरण घटना के हीरो रहे इंडियन एयरलाइंस के पूर्व मेंटेनेंस इंजिनियर राकेश शर्मा को लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया। इनके अलावा मेजर मोहित शर्मा अशोक चक्र अवॉर्ड प्राप्त के परिवार को एवं कारगिल फाइटर अखिलेश सक्सेना को विशेष सम्मान दिया गया ।इस आयोजन में कारगिल युद्ध में लड़े जवानों के अलावा फैशन, फिल्म, मीडिया, खेल, कला, मनोरंजन, सामाजिक, ज्योतिष क्षेत्र में उत्कर्ष कार्य करने के लिए और राजनीतिक फील्ड से जुड़ी कुछ विशेष हस्तियों यूथ आइकन अवॉर्ड2024 से भी सम्मानित किया गया इस भव्य आयोजन में देश की कई हस्तियों को एक मंच पर बुलाकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में पदम श्री जितेंद्र सिंह शंटी राजेश कुमार डिप्टी जेलर तिहाड़ जेल, भारत केसरी डिप्टी डीएसपी जगदीश काली रमन, सुल्तान मूवी फेम, मेजर मोहित शर्मा अशोक चक्र अवार्ड प्राप्त, एक्टर सार्थक चौधरी,कारगिल फाइटर अखिलेश सक्सेना, फिल्म डायरेक्टर राकेश सावंत, आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

तीर्थंकर प्रकृति का बंध कराने वाला पर्व सोलह कारण महापर्व व्रत महा महोत्सव 18 अगस्त से 18 सितम्बर तक होगा आयोजित

सौरभ जैन. शाबाश इंडिया

पिडावा। श्री सांवलिया पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर पिड़ावा के आचार्य श्री आर्जव सागर माहराज ससंघ के सानिध्य में नवीन मांगलिक भवन में सोलह कारण महापर्व व्रत महा महोत्सव का विधि विधान से 18 अगस्त से 18 सितम्बर तक आयोजित किया जाएगा। जैन समाज प्रवक्ता मुकेश जैन चेलावत ने बताया कि आचार्य 108 श्री आर्जव सागर महाराज ससंघ का 37वां चातुर्मास बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ श्री सांवलिया पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र बड़ा मंदिर में चल रहा है और धर्म की गंगा बह रही है। जिसमें श्रावक श्राविकाओं को पुण्य लाभ मिल रहा है। रविवार को प्रातः सन्त आचार्य आर्जव सागर महाराज ने अपने प्रवचन में बताया कि भव्य बन्धुओं अनादिनिधन जैन धर्म में अनादि काल से चले आ रहे हैं। षोड़सकारण और दशलक्षण आदि महापर्व हम सब भव्यों के लिए मोक्ष महल की सीढ़ी के समान है। दर्शनविशुद्धि आदि सोलह भावनाओं के भाने से एवं इनका शुद्ध रीति से व्रतानुष्ठान करने से तीर्थंकर प्रकृति का संचय होता है।

जिससे यह आत्मा लोकपूज्य बनकर समोसारण की अधिकारी होकर अंत में मुक्तिपद को प्राप्त करती है। महाराज जी ने षोड़सकारण व्रत के बारे में बताया कि एक दरिद्र कन्या से षोड़सकारण व्रत के पालन से विदेह क्षेत्र के सीमन्धर तीर्थंकर भगवान का एंव श्रीषेण राजा ने वैयावृत्ति भावना से आगे शान्ति नाथ तीर्थंकर का पद पाया था। रावण ऑरहंत भक्ति भावना से एंव श्री कृष्ण वैयावृत्ति भावना से आगे तीर्थंकर बनेंगे। अतः हमें भी ऐसे अनन्तानन्त जीवो के समान षोड़सकारण व्रत-भावना से तीर्थंकर पद की भावना भातें हुये मुक्ति-पथ को अपनाना चाहिए। लोक कल्याण महामंडल विधान 22 अगस्त से 6 सितंबर तक आयोजित होगा।

पांच दिवसीय अर्हम स्वात्म साधना शिविर का हुआ समापन

शिविरार्थियों की निकली विशाल शोभायात्रा। मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर हुआ सम्मान

अपनी इच्छाओं के त्याग का नाम ही दीक्षा है : मुनि प्रणम्य सागर

जयपुर. शाबाश इंडिया

मीरामार्ग के आदिनाथ भवन पर चातुर्मास रत मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में आयोजित पांच दिवसीय अर्हं स्वात्म साधना शिविर का रविवार को भव्य समापन किया गया। इससे पूर्व शिविरार्थियों को प्रातः राजावत फार्म एस एफ एस स्थित शिविर स्थल से गाजे बाजों के साथ आदिनाथ भवन लाया गया। आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की पूजा के बाद आचार्य समय सागर महाराज एवं मुनि प्रणम्य सागर महाराज का अर्घ्य चढाया गया। तत्पश्चात अष्ट प्रतिमाधारी डी सी जैन एवं परिवार जनों ने संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज एवं आचार्य समय सागर महाराज के चित्र का जयकारों के बीच अनावरण किया। भगवान आदिनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। समाजश्रेष्ठी कमल किशोर, पंकज कुमार, अजित कुमार छाबड़ा परिवार ने मुनि प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन एवं शास्त्र भेट करने का पुण्यार्जन प्राप्त किया। तत्पश्चात शिविरार्थियों का समिति की ओर से नन्द किशोर पहाड़िया, प्रमोद पहाड़िया, प्रदीप जैन, विनोद जैन कोटखावदा, सुशील पहाड़िया, राजेन्द्र सेठी, सुनील बैनाडा,तेज करण चौधरी, लोकेन्द्र जैन, जम्बू सोगानी, अशोक सेठी, राजेश काला आदि ने प्रमाण पत्र एवं जिनवाणी भेट कर सम्मानित किया। इस दौरान पूरा पाण्डाल तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो उठा। इस मौके पर पूरे देश से आये शिविरार्थियों ने अपने पांच दिन के अनुभव सुनाएं। मंच संचालन समिति के संयुक्त मंत्री सीए मनोज जैन, अर्हम टीम के नयन भैय्या, सौम्या जैन ने किया। इस मौके पर मुनि श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि सभी धर्म हमें पर से हटकर स्व पर जाने का उपदेश देते हैं।

इस शिविर में अहमं से अर्हम तक की यात्रा

पर से हटकर स्वं में आने का जीता जागता उदाहरण है। भारतभूमि का गौरव है कि यहाँ का प्रत्येक मानव आध्यात्मिक है। विदेशी भी यहा अध्यात्म चेतना के लिए आते हैं। भगवान महावीर, राम, श्री कृष्ण एवं अन्य महापुरुषों के कारण भारत विश्व में पूजा जाता है जो जीना अच्छे से सीख सकता है, वह मरण भी अच्छे से पा सकता है। यह सब अध्यात्म की दैन है। इस शरीर से ममत्व को छोड़कर अपनी दृष्टि में स्वंय में आत्मलीन होना जरुरी है। मुनि श्री ने कहा कि अपनी इच्छाओं के त्याग का नाम ही दीक्षा है। दीक्षा लेने के बाद ही सही शिक्षा ग्रहण की जाती है। जो इस शिविर में शामिल हुए हैं उन्हें जिन मुद्रा में आत्मलीन होना आ गया है। अब उन्हें सम्हालने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें बुद्धि और मन की लड़ाई का ज्ञान हो गया है। बाहरी दुनिया से दूरी रखने के लिए संयम आवश्यक है। अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज के सानिध्य में मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर धर्म सभा में प्रवचन से पूर्व आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की संगीतमय पूजा की गई। किया। इस मौके पर समाजश्रेष्ठी नन्द किशोर पहाड़िया, प्रमोद पहाड़िया, प्रदीप जैन, विनोद जैन कोटखावदा, दर्शन बाकलीवाल, राकेश छाबड़ा, सुनील बज आदि ने श्रीफल भेट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा एवं उपाध्यक्ष तेज करण चौधरी ने बताया कि मीरामार्ग के श्री आदिनाथ भवन पर मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में सोमवार, 19 अगस्त को प्रातः 8.15 बजे रक्षाबंधन वात्सल्य पर्व मनाया जाएगा। इस मौके पर रक्षाबंधन कथा का संगीतमय वाचन किया जाएगा। मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के प्रवचन होगें। मुनि श्री की आहारचर्या प्रातः 9:40 बजे होगी। दोपहर में 3.00 बजे शास्त्र चर्चा होगी। गुरुभक्ति एवं आरती सांय 6:30 बजे एवं वैयावृत्ति रात्रि 8:30 बजे होगी।

एक रक्षासूत्र देश,समाज,परिवार के प्रति कर्तव्यों का, यही रक्षाबंधन की सार्थकता

रक्षाबंधन को सिर्फ बहन और भाई का त्योहार समझा जाता है। बहन के द्वारा भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र जिसे राखी कहा जाता है बांध कर सिर्फ एक परंपरा का निर्वहन किया जा रहा है। जबकि उस रक्षा सूत्र का बहुत बड़ा और गूढ़ अर्थ है की भाई बहन को यह वचन देता है कि मैं हमेशा तेरी रक्षार्थ तेरे साथ खड़ा रहूंगा, जब भी कोई संकट आएगा तो वह संकट बहन पर आने से पहले भाई के ऊपर से गुजरेगा और बहन भी वह रक्षा सूत्र बांधते हुए यह

संकल्प लेती है कि भाई तेरी सुरक्षा पर आने वाले हर संकटों से मुक्ति का हर समय मैं उपाय खोजूंगी और उन्हें दूर करने का हर सम्भव प्रयास करूंगी। रक्षाबंधन का व्यापक स्वरूप यदि देखें तो सीमा पर जाने वाले सिपाहियों को तिलक और रक्षा सूत्र बांधकर अलविदा किया जाता था। उनसे यह वचन लिया जाता कि तुम अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दोगे और किसी भी तरह मन में संशय उत्पन्न नहीं करोगे। वर्तमान में भी आवश्यकता है कि हम रक्षासूत्र के इस अद्भुत पर्व पर यह वचन ले कि हम अपने देश के स्वाभिमान व मर्यादा को अक्षुण्ण रखते हुए सदा देशभक्ति से ओत प्रोत रहेंगे। हमेशा निर्बल, असहाय की मदद, महिलाओं के सम्मान, बेटियों के मान, प्रकृति के प्रति समर्पण का भाव रखेंगे यही हमारा रक्षाबंधन पर्व है। एक रक्षा सूत्र बांधते हैं अपने गुरुओं के प्रति आदर भाव का, जिस धरती मां ने हमें इतना सब कुछ दिया उसको संवारने का, अपने देश समाज परिवार के साथ खड़े होने का, एक रक्षा सूत्र बांधते हैं अबला, कमजोर, दुर्बल की रक्षा का, एक रक्षा सूत्र बांधते हैं ईमानदारी का जीवन हमेशा व्यतीत करेंगे तभी इस रक्षाबंधन पर्व की सार्थकता है। किसी भी पर्व की सार्थकता हो तभी वह पर्व मनाना चाहिए, अन्यथा परंपराओं के निर्वहन के लिए किसी पर्व को मनाए तो फिर वह केवल औपचारिकता है। औपचारिक जीवन नहीं वास्तविक जीवन जीना चाहिए यही भारतीय संस्कृति की निशानी है। भारत की गौरव पूर्ण व विश्व को सिखाने वाली मर्यादित संस्कृति की रक्षार्थ, समाज परिवार के प्रति कर्तव्यों के पालनार्थ, कमजोर की सुरक्षार्थ व जीवन के मूल्यों के निर्वहनार्थ आओ रक्षा सूत्र के पर्व को मनाए। **-संजय जैन बड़जात्या कामां, राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री जैन पत्रकार महासंघ**

जैन धर्मावलंबी रक्षाबंधन पर्व को साधु-संतो की रक्षा के संकल्प दिवस के रूप में मनाएंगे

भगवान श्रेयांसनाथ का मनाएंगे मोक्ष कल्याणक, महामुनि विष्णु कुमार की करेंगे पूजा-अर्चना

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन धर्मावलंबियों द्वारा रक्षाबंधन के पर्व को सोमवार, 19 अगस्त को साधु संतों की रक्षा के संकल्प दिवस के रूप में मनायेगे इस मौके पर जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया जावेगा। साथ ही दिगम्बर जैन धर्म के प्रसिद्ध संत श्री विष्णु कुमार महामुनि द्वारा हस्तिनापुर में 700 जैन मुनियों के उपसर्ग को दूर कर मुनियों की रक्षा की थी, इसलिए महामुनि विष्णु कुमार की पूजा की जायेगी। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा 'के अनुसार श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन राजा बलि द्वारा हस्तिनापुर में 700 साधु-संतों पर अत्याचार किये गये थे। इस अत्याचार एवं उपसर्ग को महामुनि विष्णु कुमार ने वामन का रुप धरकर दूर किया था। उन्होंने साधु-संतों को आहार करवाकर स्वयं ने आहार किया था। इसलिए इस दिन को जैन धर्मावलंबी रक्षाबंधन के पर्व को प्रति वर्ष साधु-संतों की रक्षा के संकल्प दिवस के रूप में मनाते हैं। इस मौके पर दिगम्बर जैन संतों के चातुर्मास स्थलों पर एवं शहर के दिगम्बर जैन मंदिरों में महामुनि विष्णु कुमार की अष्ट द्रव्य से पूजा अर्चना की जावेगी। जैन श्रावको द्वारा आचार्यों, मुनिराजो, आर्यिका माताजी की पिच्छिका के रक्षा सूत्र बांधा जाकर साधु संतों व जिनवाणी तथा जैन धर्म की रक्षा का संकल्प लिया जाएगा। इस मौके पर साधु संतों के विशेष प्रवचन होंगे। जैन के मुताबिक इसी दिन जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस मनाया जाएगा। मंदिरों में प्रातः भगवान के अभिषेक, शांतिधारा के बाद पूजा अर्चना की जावेगी। पूजा के दौरान निर्वाणोत्सव मनाया जाकर मंत्रोच्चार के साथ जयकारों के बीच निर्वाण लाडू चढाया जाएगा।

उपनगरीय अग्रवाल समाज समिति, बापू नगर जयपुर के चुनाव संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

उपनगरीय अग्रवाल समाज समिति, बापू नगर जयपुर के चुनाव निर्विरोध संपन्न हुए। अशोक गोयल, निवर्तमान अध्यक्ष, सुरेश चंद गुप्ता महासचिव ने बताया कि चुनाव में निम्न पदाधिकारीयो एवं कार्यकारिणी सदस्यों का निर्वाचन निर्विरोध संपन्न हुआ : पूरणमल बंसल अध्यक्ष, राधेश्याम गुप्ता वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सुरेश चंद गुप्ता उपाध्यक्ष, सुरेश चंद बंसल महासचिव, दीपेश गर्ग उप मंत्री, दिनेश अग्रवाल 'पंच' कोषाध्यक्ष, श्रीमती मोना अग्रवाल संयुक्त सचिव के पद पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए।

कमला नगर जैन मंदिर में आयोजित हुई युवा संगोष्ठी

मिला उपाध्यायश्री विहसंतसागर जी महाराज का मंगल सानिध्य

आगरा. शाबाश इंडिया। मेडिटेशन गुरु उपाध्याय श्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सानिध्य एवं पावन वर्षायोग समिति के तत्वावधान में आगरा के कमलानगर स्थित श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर के आचार्य श्री विद्यासागर संत निलय में 18 अगस्त को आगरा नगर के लगभग 300 युवाओं ने लिया जैन युवा संगोष्ठी में भाग। जिसकी शुरूआत समाधिस्थ आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं बालिकाओं के मंगलाचरण की प्रस्तुति के साथ कियो इस अवसर पर संगोष्ठी में आए आगरा नगर के समस्त युवाओं अपने मंडल/शैली की तरफ से उपाध्यायश्री के समक्ष श्रीफल भेंटकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कियो संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मेडिटेशन गुरु उपाध्यायश्री ने कहा कि सभी युवाओं को जैन समाज में आगे आए। उन्होंने समस्त युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि आने वाला समय बहुत ही विकराल होते जा रहा है इसलिए सामाजिक एकता अति आवश्यक है। उन्होंने विशेष तौर पर युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा युवाओं को मंच मुकुट से दूर रहकर समाज की सच्ची सेवा में आगे आना चाहिए और साधु-संतो की सेवा में तत्पर रहना हैं। आपके नगर में आए साधु संतों के आहार विहार निहार में आगे आकर सहभागिता करें। महाराज श्री के उद्बोधन के उपरांत नगर के युवाओं ने मुनि श्री के समक्ष अपनी-अपनी बात रखी और उनका समाधान भी पाया। इस दौरान उपाध्यायश्री विहसंतसागर महाराज जी ने आगरा शहर की समस्त युवाओं का आह्वान करते हुए जैन युवा परिषद का गठन भी कियोजिसमें आगरा नगर को 6 जोन में विभाजित किया, ताकि सभी व्यवस्थाएं सुचारू रूप से एवं सुदृढ़ तरीके से चलती रहे। उपाध्याय श्री ने इस युवा परिषद का मुख्य संयोजक युवा उद्यमी रोहित जैन अहिंसा को बनाया। कार्यक्रम का सफल संयोजन मुख्य संयोजक मनोज बाकलीवाल के निर्देशन में अनुज जैन क्रांति एवं अंकेश जैन ने किया।

षोडशकारण एवं मेघमाला व्रत मंगलवार 20 अगस्त से होंगे प्रारंभ

दिगम्बर जैन धर्मावलंबी मनायेगे एक माह तक षोडशकारण पर्व, जैन मंदिरों में होंगे विशेष धार्मिक आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

भाद्रपद कृष्णा एकम्‌मंगलवार 20 अगस्त से भाद्रपद मास प्रारंभ होने से दिगम्बर जैन मंदिरों में एक माह तक रौनक रहेगी। जैन धर्मावलंबी एक माह तक षोडशकारण पर्व मनाएंगे। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' के अनुसार मंगलवार 20 अगस्त से षोडशकारण व्रत एवं मेघमाला व्रत प्रारम्भ हो जायेगे जो बुधवार 18 सितम्बर तक चलेंगे। श्री जैन के मुताबिक रविवार ,8 सितम्बर से दशलक्षण महापर्व प्रारम्भ होगें जो मंगलवार 17 सितम्बर तक चलेगे। इससे पूर्व शनिवार, 24 अगस्त को चन्दन षष्ठी, मंगलवार, 3 सितम्बर से शुक्रवार, 6 सितम्बर तक लब्धिविधान तेला, शुक्रवार, 6 सितम्बर को रोट तीज एवं चौबीसी व्रत मनाया जायेगा। रविवार 8 सितम्बर से गुरुवार, 12 सितम्बर तक पुष्पांजलि व्रत,(फलफांदन), रविवार, 8 सितम्बर से मंगलवार, 17 सितम्बर तक दशलक्षण व्रत, मंगलवार, 10 सितम्बर को निर्दोष सप्तमी, शुक्रवार, 13 सितम्बर को सुगन्ध दशमी मनाई जावेगी ।रविवार, 15 सितम्बर से मंगलवार, 17 सितम्बर तक कर्म निर्झर तेला, सोमवार, 16 सितम्बर से बुधवार, 18 सितम्बर तक रत्नत्रय व्रत, मंगलवार 17 सितम्बर को अनन्त चतुर्दशी एवं दशलक्षण समापन कलश होंगें। बुधवार 18 सितम्बर को षोडशकारण व्रत समापन कलश एवं पड़वा ढोक - क्षमा वाणी पर्व मनाया जाएगा।

श्रमण संस्कृति रक्षा दिवस पर होंगे सात सौ श्री फल समर्पित

गंज मन्दिर में मनाया जायेगा रक्षा बंधन विधान

श्रेयांस नाथ भगवान के निर्वाण कल्याणक पर चढ़ेगा लाडू

अशोक नगर. कासं। श्रमण संस्कृति के लिए आज का दिन बहुत ही विशेष है जब श्री विष्णु कुमार महा मुनिराज ने बटुक ब्राम्हण का वेश धारण कर अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों की रक्षा की थी। इस दिन को मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज ने श्रमण संस्कृति रक्षा दिवस घोषित किया है। आज हम सब मिलकर सात शतक श्री फल से रक्षा बंधन विधान करेंगे जिसमें आप सभी को अपने घरों से श्री फल लेकर आना है उक्त आश्य केउद्गार मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने सुभाष गंज मन्दिर में व्यक्त किए। इसके पहले आज मंगलाष्टक के साथ भगवान की महा आराधना राजेश कासल के द्वारा की गई इसके बाद जगत कल्याण की कामना के लिए जैन युवा वर्ग के संरक्षक शैलेन्द्र श्रागर के मंत्रोच्चार करते हुए भगवान जिनेन्द्र भगवान की महा शान्ति धारा की गई इससे साथ ही कलशाभिषेक किया गया।

किया जायेगा निर्वाण कल्याणक पर लाडू समर्पित

इस दौरान भक्तों द्वारा कलश किए गए इस दौरान कमेटी मंत्री शैलेन्द्र श्रागर ने कहा कि आज का दिन सभी के लिए बहुत ही विशेष है कल भगवान श्री श्रेयांस नाथ स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर निर्वाण कल्याणक समर्पित किया जायेगा इसके साथ ही रक्षा बंधन विधान होगा । हम उन महामुनि राजों को याद करेंगे जिन्होंने उपसर्ग सहन कर आज के दिन को सार्थक किया था कल हम सब मिलकर ऐसे विधान को सम्पन्न करेंगे।

सभी को श्री फल भेंट करने का मिलेगा सौभाग्य

जिसमें सभी को श्री फल मंडल पर चढ़ाने का सौभाग्य मिलेगा कमेटी के अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई संयोजक उमेश सिघई विपिन सिंघई प्रदीप तारई राजेंद्र अमन अजित वरोदिया सहित अन्य प्रमुख जनो ने सभी भाग लेने का निवेदन किया है।

श्री वीर सेवक मण्डल, जयपुर के पदाधिकारियों के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

महेश काला अध्यक्ष, भानु छाबड़ा मंत्री, राकेश छाबड़ा कोषाध्यक्ष बने

जयपुर. शाबाश इंडिया। रविवार 18अगस्त, श्री वीर सेवक मण्डल, जयपुर के पदाधिकारियों के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें अध्यक्ष महेश काला, उपाध्यक्ष प्रदीप गोधा, मंत्री भानु कुमार छाबड़ा, संयुक्त मंत्री सुरेश भौंच, कोषाध्यक्ष राकेश छाबड़ा, एवं स्टोर ईन्चार्ज शरद बाकलीवाल निर्विरोध चुने गए। कार्यकारिणी सदस्य के रूप में योगेश टोडरका को मनोनीत किया गया।

धर्म पुरुषार्थ से मोक्ष मार्ग : मुनि श्री पावनसागर जी महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुगार्पुरा में परम पूज्य मुनि श्री 108 पावनसागर जी महाराज ने रविवार को धर्म पुरुषार्थ से मोक्ष मार्ग पर जाने के बारे में प्रवचन करते हुए बताया कि तिल में है तेल, चकमक में है आग, तेरे में तेरा प्रभु करे आत्मा में वासे तिल में तेल है किंतु तिल को तेल नहीं कह सकते, पुरुषार्थ करने पर ही अर्थात तिल को घाणी में पेलने पर ही तेल प्राप्त होगा। इसी प्रकार चकमक में आग है। चकमक की रगड़ रुई के सम्पर्क करने से ही उसमें आग पैदा होगी। शरीर में आत्मा है, लेकिन भक्ति भाव पूजा की शुभ क्रिया से शुभ उपयोग में रहने पर ही प्रभु का दर्शन होगा। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान सम्यक चारित्र को साथ लेकर चलना होगा। शरीर में आत्मा का प्रवास है, अस्तित्व है, जैसे दूध में घी। किंतु पुरुषार्थ से ही पूजा, भक्ति शुभ क्रिया में मन लगाकर तथा अशुपयोग से दूर रहकर आत्म तत्व को बाहर निकलने के लिए चारों प्रकार के पुरुषार्थ करने होंगे, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अर्थ पुरुषार्थ धर्म के साथ हो, काम पुरुषार्थ धर्म की रक्षा हेतु वंश परम्परा को बढ़ाने के लिए हो मुनि आपको समझाते हैं कि शरीर के भीतर आत्मा छिपी हुई है, बाहर लाने के लिए पुरुषार्थ करना होगा। दृष्टांत के माध्यम से मुनी श्री ने बताया कि गड़रिया के भेड़ के झुंड में शेरनी का बच्चा पल रहा थो सारी क्रिया, आचरण, आवाज भेड़ के बच्चे की तरह करने लगा। एक दिन जंगल में शेर की दहाड़ से सभी जानवर इधर उधर भागने लगे, शेरनी का बच्चा भी झुंड में से डरकर भागने लगो शेर ने देखा यह जंगल का राजा डर कर क्यों भाग रहा है, शेर ने उसे पकड़ कर कहा तुम तो जंगल के राजा हो तुम डरकर क्यों भाग रहे हो उसने कहा मैं भेड़ के झुंड में था और मेरी वैसे ही आदत हो गई शेरनी के बच्चे को शेर नदी पर पानी के पास लेकर जाता है और कहता है तुम अपना चेहरा देखो, तुम शेर हो, लेकिन उसकी आवाज तो भेड़ की तरह थी । अचानक उसका गला खुल गया, और उसने दहाड़ लगाई तो जंगल के जानवर भागने लगे। इस दृष्टांत से यह स्पष्ट है कि हमारे में परमात्मा बनने के गुण मौजूद है, उन्हें पुरुषार्थ करके जगाना है, मोक्ष मार्ग की ओर बढ़ना है ।ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र काला ने बताया कि प्रवचन के शुभारंभ में दीप प्रज्वलन, रमेश चन्द छाबड़ा ने, मंगलाचरण श्रीमती सुशीला काला ने किया। जिनवाणी भेंट करने का पुण्यार्जन संजना छाबड़ा व सुशीला बिलाला को प्राप्त हुआ। पंडित अजित जैन ने जिनवाणी स्तुति की। सभी ने आचार्य श्री व मुनि श्री को अर्घ्य समर्पित किया। सोमवार को प्रातः 6:30 बजे अभिषेक शांतिधारा भगवान श्रेयांस नाथ जी के मोक्ष कल्याणक दिवस पर निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा एवं 8:00 बजे अकंपनाचार्यादि पूजा करने के बाद मुनि श्री के प्रवचन होंगे मुनिश्री ससंघ के आशीर्वाद के साथ रक्षा बंधन वात्सल्य पर्व सभी श्रावक आपस में राखी बांधकर मनायेंगे।

महावीर इंटरनेशनल, वी आई पी अंचल, कोलकाता ने बच्चों को भोजन कराया

सुरेश चंद्र गांधी। शाबाश इंडिया
कोलकाता । महावीर इंटरनेशनल,वी आई पी अंचल,कोलकाता केन्द्र ने एसियन सहयोगी संस्था,इंडिया द्वारा परिचालित अनाथालय (बच्चों)जाकर,बच्चों को भोजन व खेलने का सामान भेंट किया। वीरा इंदु सादानी की प्रार्थना द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हूआ। मंच पर वीर अनूप कुमार जैन, चेयरमैन ,वीर सुरेन्द्र प्रसाद पटवारी सह चेयरमैन ,कोषाध्यक्ष वीर अनील जैन,वीर सुभाष लखोटीया, वीर अरुण अग्रवाल, वीर संदीप खन्देल्वाल,वीर बाबुलाल जी जान्गड,वीर विमल शर्मा,वीरा इंदु सादानी,वीरा लवी बजाज,वीरा सुचीता खंडेलवाल,वीर रतन जैन फलोदिया व एसियन सहयोगी संस्था के तोपन मन्ना। महावीर इंटरनेशनल,वी आई पी अंचल,कोलकाता के सदस्यों के परिवार की गरिमामय उपस्थिति रही। श्रीमती सुमन चोरडिया,ब्यूरो चीफ,अहिंसा क्रांति,विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रही,व बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करी। चेयरमैन,वीर अनूप कुमार जैन ने बच्चों का उत्साह वर्धन करते हुए कहा कि आज मुझे बच्चों के साथ बचपन याद आया। एसियन सहयोगी संस्था के श्री तोपन मन्ना ने महावीर इंटरनैशनल के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया। मंच संचालन वीर रतन जैन ने किया बच्चों ने नृत्य प्रस्तुत किया।

राजकुमार कोठ्यारी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र राजस्थान अंचल के अध्यक्ष बने

जयपुर. शाबाश इंडिया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के आज सम्पन्न हुए चुनावों में वास्तुविद् राजकुमार कोठ्यारी निर्विरोध अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी अनिल जैन पूर्व आईपीएस अधिकारी ने भट्टारक जी की नसियाँ में आज तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के सदस्यों की उपस्थिति के बीच घोषणा की। तत्पश्चात निर्वाचित अध्यक्ष राजकुमार कोठ्यारी ने तीर्थों के संरक्षण एवं संबर्द्धन के सम्बन्ध में जानकारी दी और अपील की तीर्थों की रक्षा एवं सुरक्षा ही हमारा प्रथम कर्त्तव्य हे। मंगलाचरण पं. डॉ. विमलकुमार जैन ने किया एवं संचालन मनीष बैद ने किया। इस अवसर पर राजस्थान के कोटा, अजमेर, दूदू, किशनगढ़, दौसा, उदयपुर, बांसवाड़ा, फागी, केसरिया जी आदि से सदस्य उपस्थित थे।

मंदिर समोशरण का प्रतीक है: परम पुज्य मुनि श्री पुज्य सागर जी

इंदौर. शाबाश इंडिया। अंतमुर्खी मुनि पूज्य सागर महाराज के चातुर्मास के धर्म प्रभावना रथ के तीसरे पड़ाव के पांचवे दिन भक्तामर महामंडल के तीसरे दिन विधान में अर्घ्य चढ़ाकर भगवान आदिनाथ की आराधना की गई। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि विधान प्रारंभ होने से पहले भगवान अभिषेक, शांतिधारा की गई। अभिषेक,शांतिधारा करने का लाभ विधान के मुख्य पुण्यार्जक निर्मल, आकाश, राजुल, विकास, रेखा, गीतांश, गतिक, भविक, हितिका पांड्या परिवार, गुमास्ता नगर को प्राप्त हुआ। सुनील गोधा, पवन पाटोदी और संजय पापड़ीवाल ने बताया कि तीसरे दिन चार काव्य की आराधना करते हुए 224 अर्घ्य समर्पित की गई। तीन दिन कुल 672 अर्घ्य समर्पित किए गए। विधान 28 अगस्त तक चलेगा।

दिगम्बर जैन समाज बापू नगर सम्भाग के परिवारों का समागम हुआ महिलाओं ने उत्साह के साथ तिरंगा लहराया

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगम्बर जैन समाज बापू नगर सम्भाग के सेक्टर प्रतिनिधियों एवं परिवारों का आज समागम हुआ नारायण सिंह सर्किल स्थित दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी में जिसकी अध्यक्षता सम्भाग के अध्यक्ष उमरावमल संघी ने की, जिसमें महिलाओं ने उत्साह के साथ तिरंगा लहराया और जोश के साथ वन्दे मातरम् के नारे लगायें। उमरावमल संघी ने स्वागत उद्बोधन के साथ सभी का स्वागत किया और कहाँ कि बापू नगर सम्भाग जैन परिवारों के माध्यम से जो भी विद्यार्थी शिक्षा में सहयोग चाहेगा उसे सहयोग दिया जायेगा। युवाओं को रोजगार और महिलाओं को कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान करने की पहल करेगा। व्यक्तित्व विकास पाठ्यक्रमों का आयोजन होगा। धार्मिक यात्राओं के माध्यम से जैन संस्कृति के संरक्षण और संबर्द्धन में योगदान देगा जैन समाज बापू नगर सम्भाग। जिस प्रकार स्व. महेन्द्र कुमार पाटनी ने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में समाज को संगठित किया है अब भी संगठित रहेगा। मंत्री मनीष बैद ने बताया कि समारोह में समाज के प्रत्येक युवा वर्ग ने अपनी उपस्थिति से पूरे माहौल को जोशीला बनाया। सायंकाल सामूहिक गोठ हुई। महिलाओं ने देशभक्ति गान से रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर ज्ञानचन्द झांझरी, प्रदीप कुमार जैन, राजकुमार सेठी, रमेश बोहरा, सुरेन्द्र कुमार मोदी, नवीन संघी, शैलेन्द्र गोधा, संजय पाटनी, सूरज अजमेरा, राजेन्द्र बाकीवाला, मनोज झांझरी, शैलेन्द्र गोधा, हीराचन्द बैद, धनु कुमार जैन, अशोक पाटनी, डॉ. ज्ञानचन्द सौगानी, अतुल सौगानी, पंकज लुहाड़िया, अभिषेक पाटनी, महावीर झागवाले, रवि सेठी, शोभित काला, आकाश जैन, शीला पाटनी, शकुन बाकीवाला, अलका बाकलीवाल, चित्रा डंडिया, कीर्ति मोदी, रचना बैद, संगीता जैन, सुरीला सेठी, प्रीति झांझरी, दीपाली संघी विशेष रुप से समारोह को सफल बनाने की व्यवस्था से जुड़ी रही।

बदले की भावना के साथ जीवन मत जीना: मुनि श्री विनय सागर जी

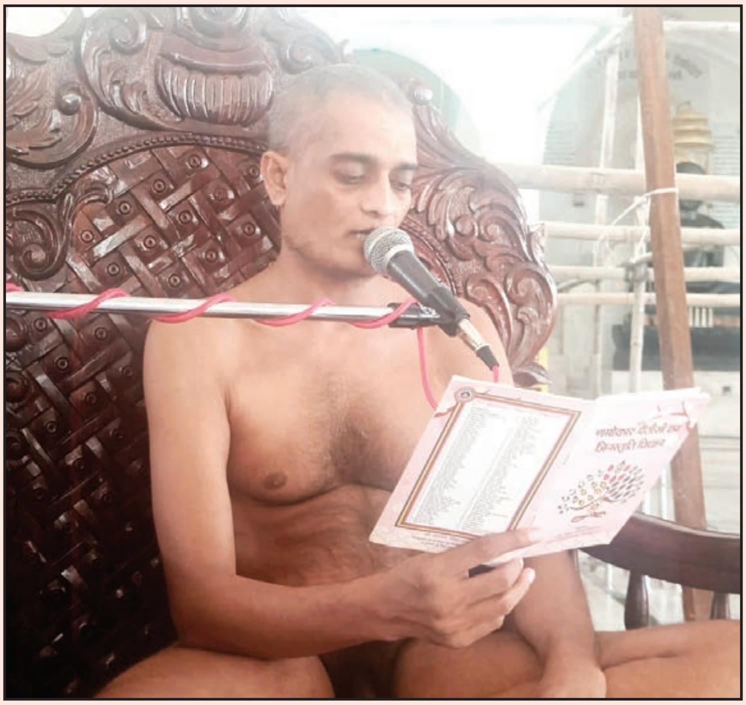

भिंड. शाबाश इंडिया

नगर के श्री 1008 महावीर कीर्तिस्तंभ मंदिर में चल रहे 35 दिवसीय 35 गुरु परिवार के 35 मंडलीय 35 माढने पर चल रहे णमोकर जिनस्तुती विधान के 25 वे दिन मुनि श्री के सानिध्य मे श्री जी का अभिषेक, शांतिधारा नित्य पूजन हुआ,जिसमे अधिक से अधिक संख्या में लोग शामिल हों रहे है विधान में मुनि विनम्र सागर जी महाराज ने रविवार को अपने प्रवचन में यह बात कही। उन्होंने कहा कि इसी तरह हम भी यहां संसार में आए हैं , हमें यहां की संस्कृति का ज्ञान होना चाहिए। यहां हम कुछ समय के लिए ही आए हैं, फिर झगड़ा क्यों करते हो। आप इस संसार में तमाशा देख रहे हो कि तमाशा कर रहे हो, साधु तो तमाशा गुरुदेव ने कहा कि बदले की भावना के साथ जीवन मत जीना। आप पूछते हैं कि क्या आपको अपनी मातृभाषा मालूम है? फिर जवाब देते हैं प्राकृत ही हमारी मातृभाषा है । पूरा णमोकार मंत्र प्राकृत में ही है। जिनेंद्र भगवान के वचन भी औषधि का रूप है। शांति धारा के शब्दों से विश्व में शांति आ सकती है। अपने धन के लिए पूरा जीवन खत्म कर दिया ।धन सुविधा है, सुख नहीं ।आत्मा के नैसर्गिक गुण का नाम है सुख। विधि निषेध की जानकारी इकट्ठी कर लो या गुरु से समझ लो। जिन श्रावकों ने गुरु को अपना हाथ पकड़ा दिया है वो कभी तुमको गिरने नहीं देंगे, हर हाल में संभाल लेंगे। पुण्य शुद्धि वर्धक वषायोग के अध्यक्ष सपना जैन ने बताया कि रविवार को प्रातः गुरुदेव के समक्ष संभव जैन एवं दिल्ली से पधारे रोहित जैन द्वारा पाद प्रक्षालन किया गए बाद इस अवसर पर सुनीता जैन, सुमन जैन, तनु जैन, अभिषेक जैन, अमन जैन आदि विशेष रूप से मौजूद थे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के चुनाव संपन्न

डी . के. जैन निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए

इंदौर. शाबाश इंडिया

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल (मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़) के अध्यक्ष निर्वाचन हेतु साधारण सभा आज रविवार को प्रातः 10.30 बजे गोमटगिरि (इंदौर) तीर्थक्षेत्र पर प्रारंभ हुई।जिसमें चुनाव अधिकारी महावीर बैनाडा एवं सहायक डी के जैन डीएसपी ने चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ कर उपस्थित सदस्यों को जानकारी दी कि मध्यांचल के अध्यक्ष पद हेतु तीन फार्म जमा हुए थे जिसमें अमिताभ मनया भोपाल, मांगीलाल रतलाम और दिनेश कुमार जैन (डीके जैन) इन्दौर से उम्मीदवार थे। मनया जी और मांगीलाल जी ने अपने फार्म बापस ले लिये। एक मात्र उम्मीदवार दिनेश कुमार जैन शेष रहने से उन्हें निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष डीके जैन ने सबका हृदय से धन्यवाद देते हुए कहा कि आपको विश्वास दिलाता हूं कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल अपनी पूरी क्षमता तीर्थो के विकास में लगाएगी। सबसे ज्यादा दिगम्बर जैन तीर्थ एवं अतिशय क्षेत्र बुन्देलखण्ड में स्थित है जो कि अपेक्षाकृत वित्तीय दृष्टि से कमजोर है। बुन्देलखण्ड में जितनी जैन प्रतिमाएं जमीन के ऊपर हैं उससे कई गुना भूगर्भ में भी है, जिनका उद्धार किया जाना है, इस हेतु योजना बनाएंगे। जो प्रतिमाएं दृष्टिगोचर हैं उनमें से भी अधिकांश भग्नावशेष अवस्था में है जिन्हें ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक दृष्टिकोण से भी जीर्णोद्धार किया जाना है। आप सबके साथ मिलकर योजना बद्ध तरीके से यह काम करने के लिए मैं संकल्पित हूं । उन्होंने कहा कि हमें उचित इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना है।आधुनिक सुविधायुक्त धर्मशालाएं का भी निर्माण किया जाना है , क्षेत्र की कमेटियों के साथ मिलकर योजना बनाने के लिए संकल्पित हूं ।एक टीम का प्रस्तावित है जिसमें इंटीरियर डेकोरेटर, आर्किटेक्ट एवं समाज जनों का सहयोग लिया जाएगा, जो इन क्षेत्रों की यात्रा कर योजना कमेटी के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। केंद्रीय पदाधिकारीयों के साथ मिलकर इसे मुर्त रूप दिया जाएगा। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने कहा कि इन सब कर्म कार्यों के लिए विपुल धनराशि की आवश्यकता होगी , हम हमारे आचार्य एवं मुनिसंघों एवं समाज श्रेष्ठियो से निवेदन करेंगे कि कुछ राशि इस कार्य के लिए भी आरक्षित करें , ताकि नवीन तीर्थ के निर्माण के साथ हम अपने पुरातन तीर्थ का भी संरक्षण एवं संवर्धन कर सके। हाई कोर्ट एवं सुप्रीम कोर्ट के केसेस जिसमे श्री सम्मेद शिखर जी, गिरनार जी ,अंतरिक्ष पारसनाथ एवं केसरिया जी से संबंधित है उसके लिए भी हम सब मिलकर काम करेंगे। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अंचल के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर मध्यांचल के सैकड़ों सदस्य उपस्थित थे। संचालन डॉ संजय जैन ने किया। आभार मनोज पाटोदी ने माना। मध्यांचल कमेटी के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित होने पर तीर्थ क्षेत्र कमेटियों ने बधाई शुभकामनाएं प्रेषित की है जिसमें श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र (रेशंदीगिरि) नैनागिरि ट्रस्ट कमेटी के अध्यक्ष सुरेश जैन आईएएस व मंत्री राजेश जैन रागी , ट्रस्टी सन्तोष कुमार जैन घड़ी, प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ पूर्णचंद व मंत्री देवेंद्र लुहारी ,सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरि ट्रस्ट कमेटी के मंत्री सुनील घुवारा, प्रबंध समिति के अध्यक्ष कपिल मलैया व मंत्री सनत कुटेरा , जैन तीर्थ क्षेत्र आहार जी के अध्यक्ष महेंद्र बड़ागांव व मंत्री राजकुमार पठा, अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के मंत्री वीरचंद नैकोरा, कुण्डलपुर क्षेत्र के पूर्व अध्यक्ष संतोष सिंघई, उदासीन आश्रम द्रोणगिरि के अधिष्ठाता भागचंद पीली दुकान , अतिशय क्षेत्र पजनारी के महेंद्र कुमार भूषा,के साथ ही प्राचार्य सुरेंद्र कुमार,जयकुमार पुरा, राकेश पुजारी, सुरेश चंद्र दाऊ,सुखानंद शाह, सुरेश चंद्र गूगरा, सुरेश सिंघई , प्रमोद पाटनी, निर्मल बारौ, शीलचंद नेता,पदम पनवारी सहित बुन्देलखण्ड तीर्थ क्षेत्र के पदाधिकारियों व सदस्यों ने बधाई शुभकामनाएं प्रेषित की है।

संकलन : वरिष्ठ पत्रकार राजेश जैन रागी रत्नेश जैन बकस्वाहा

मन को जो रक्षित करे उसका नाम मंत्र: मुनि श्री समत्व सागर

जयपुर. शाबाश इंडिया

टोंक रोड स्थित कीर्ति नगर जैन मंदिर में हुई धर्मसभा में बच्चों, ने युवाओं को जीवन में वास्तविक सुख की कला सिखाते हुए परम पूज्य आचार्य श्री 108 विषुद्ध सागर के परम प्रभावक षिष्य मुनिश्री 108 समत्व सागर जी महाराज ने कहा कि क्या मंत्र हमारे जीवन के लिए कारकारी होते है,ये मंत्र और तंत्र हमारे जीवन में क्या प्रभाव डालते है या फिर इंन मंत्रों के कारण हमारे जीवन में कोई घटना घटित होती है।मंत्र शब्द संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है मन और त्र।मन को जो रक्षित करे उसका नाम मंत्र है। मंत्र के बोल की जो ध्वनियां होती है वे हमारे जीवन में काफी प्रभाव डालती है।जीवन में जितना प्रभाव इन ध्वनियों को हमारे जीवन में पड़ता है,यदमें ही किसी का प्रभाव किसी का पड़ता है।बड़ी-बड़ी घटनाएं मंत्रों के कारण ही देखने को मिलती है।मुनिश्री ने आगे कहा कि वर्तमान में जो लोग तनावमय जीवन जी रहे है।किसी को धन की आकांक्षा तो को सफलता की कामना,तो कोई बीमारी ग्रसित होने के कारण तनावमय जीवन जी रहा है।हमारी नकारात्मक सोच तनाव का कारण बन जाती है और जो मंत्र होते है,वे हमारे अंदर

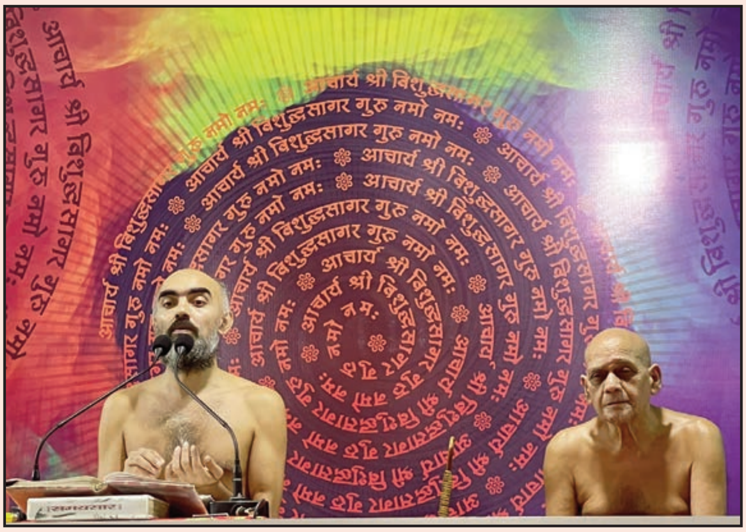

सकारात्मक उर्जा का संचार करत है।उन्होंने आगे कहा कि जब भी मंत्र बोला जाता है,तो वह अपने जीवन पर जरूर प्रभाव डालती है। जब तुम सकारात्मक शब्दोंका प्रयोग करते है तो उनका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और सकारात्मक शब्दों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आध्यात्मिक विद्या में पारलौकिक सुखों की यदि चाह है तो आपको अनेक प्रकार णमोकार आदि मंत्र निहित है णमोकार,,बीजाक्षर और ओम बीजाक्षर जैसे मंत्रों से जो शक्ति मिलती है वह हमारी सोच से बहुत परे हुआ करती है इसलिए जिनागम में इन मंत्रों का बहुत प्रभाव है कि इतना प्रभाव कि केवलज्ञान व तदस्थ में बीजाक्षर का ध्यान करके हम जन्म,जरा व मृत्यु को नाष कर सकते है। उन्होंनें आगे कहा कि जैन धर्म अद्भुत,आष्चर्यकारी व चमत्कारी है लेकिन आप अभी तक इससे जुड़ नहीं पाएं है।जीवन में यदि चमत्कार चाहिए तो आज से ही जीवन में परिवर्तन लाना शुरू कर दे और नियमित णमोकार मंत्र का उच्चारण प्रारंभ कर तब पता चलेगा कि मंत्रों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पडेगा। इसलिए कहा गया है कि जिनधर्म कितना अद्भुत है। जीवन में शांति मंत्रों के कारण से होती है,जिनधर्म के पास एक ऐसा मंत्र है णमोकार मंत्र जो 84 लाख मंत्रों का राजा। इस मंत्र की उच्चारण करके जीवन में नकारात्मक सोच निकालकर,जीवन को निरोगमय बनाकर अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहिए, मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण जैन व महामंत्री जगदीष चन्द जैन, प्रचार प्रसार मंत्री आषीष बैद ने बताया कि सोमवार को रक्षाबंधन पर्व वात्सल्य दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस मौके पर सुबह 6.30 बजे अभिषेक क्रिया शुरू होगी।इसके बाद श्रीजी की शातिधारा के बाद नित्य नियम पूजा के बाद रक्षाबंधन व भगवान श्रेयांसनाथ की पूजा होगी।इसके बाद मुनिश्री के रक्षाबंधन पर प्रवचन होंगे। तत्पश्चात सुबह 930 भगवान श्रेयांसनाथ मोक्षकल्याणक लाडू चढ़ाया जाएगा।

विशेष बच्चों ने मनाया रक्षाबंधन

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। छावनी परिषद प्रशासन द्वारा स्थानीय हनुमान चौक पर संचालित उड़ान स्कूल में शनिवार को विशेष बच्चों ने रक्षाबंधन पर्व उत्साह पूर्वक मनाया।इस अवसर पर विशेष बच्चों ने एक दूसरे को राखी बांधकर रक्षाबंधन की महत्ता जानी।इस अवसर पर बच्चों के अलावा उनके अभिभावक, प्राचार्य डॉक्टर रवि पथरिया, स्पीच थेरेपीस्ट भारती नागवान व विशेष शिक्षक पंचूलाल उपस्थित थे।

''संगिनी मैन ने किया फलदार पौधों से वृक्षारोपण''

शाबाश इंडिया

पर्यावरण संरक्षण हम सभी का दायित्व है। फेडरेशन के आश्रय सेवा पखवाड़े के तहत उदयपुर संगिनी मैन ने एक पेड़ ''संगिनी'' के नाम से बुझडा.गांव स्थित ग्रुप सदस्य कविता जैन के फार्म हाउस पर लगाए।संगिनी बहनों ने आम, जामुन,अनार,बैर अमरूद आदि फलों के 21 पौधे लगाए।संगिनी मैन की अध्यक्ष डॉ प्रमिला जैन ने बताया कि केवल पौधे लगाना ही हमारी जिम्मेदारी नहीं है बल्कि उनकी देखभाल कर उनको बड़ा करना भी हमारा दायित्व है इस हेतु वहां के चौकीदार जी को यह जिम्मेदारी सौंपी गई।उनके द्वारा हमें आश्वासन दिया कि वे इन पौधों की प्राथमिकता से सार-संभाल करेंगे। डॉ प्रमिला जैन ने बताया कि ग्रुप की सदस्य चन्द्रकला कोठारी द्वारा नीम,आम,केर,इमली,सिताफल,बैर चीकु आदि फलों के बीज से बीज बाल्स जो कि चिकनी मिट्टी व खाद के मिश्रण से तैयार की गई थी, इन बॉल्स को ऐसे स्थान पर फेंका जाता है जहां हमारा जाना संभव नहीं हो पाता है।बरसात के मौसम में ये बीज अंकुरित हो जाते हैं।हमने बुझडा.के आसपास की पहाड़ियों पर ये बाल्स चौकीदार जी से फिंकवाई। इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में डॉ प्रमिला जैन, चन्द्रकला कोठारी,कमला नलवाया, डॉ शिखा लोढ़ा,निरूपमा पुनमिया, लाजवंती धाकड़, कविता जैन, शीला सरूप्रिया, सुनीता नलवाया आदि सदस्य उपस्थित रहे।

जैन सोशल ग्रुप सेंट्रल संस्था का रजत जयंती समारोह

अंगदान है मानव स्वभाव का सर्वोच्च नैतिक उदाहरण: उपराष्ट्रपति

उपराष्ट्रपति ने नागरिकों से अंगदान के प्रति सचेत प्रयास करने का आग्रह किया

जयपुर. शाबाश इंडिया

भारत के उपराष्ट्रपति, जगदीष धनखड़ ने अंगदान की गहन महत्वपूर्णता को उजागर करते हुए इसे ''एक आध्यात्मिक गतिविधि और मानव स्वभाव की सर्वोच्च नैतिक अभिव्यक्ति'' के रूप में वर्णित किया। उन्होंने कहा कि अंगदान केवल शारीरिक उदारता से परे जाता है और करुणा और निःस्वार्थता के गहरे गुणों को दर्शाता है। उपराष्ट्रपति रविवार को जयपुर के बिड़ला सभागार में जैन सोशल ग्रुप्स सेंट्रल संथान और दधीचि देहदान समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम में अंगदाता परिवारों को सम्मानित करते हुए उपराष्ट्रपति ने नागरिकों से अंगदान की दिशा में सचेत प्रयास करने का आह्वान किया, इसे मानवता की सेवा की महान परंपरा से जोड़ते हुए एक मिशन बनाने की बात की। इस मौके पर करीब 254 देहदानी परिवार एवं 23 त्वचादानी परिवारों का सम्मान किया गया,साथ ही अंगदान जैसे उल्लेखनीय कार्य के लिए उपराष्ट्रपति ने ग्रुप्स के संस्थापक अध्यक्ष कमल संचेंती को सम्मानित किया। समारोह के विषिष्ठ अतिथियों में थे केन्द्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा, उपमुख्यमंत्री डॉ.प्रेमचंद बैरवा, विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी व, विश्व हिन्दु परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष व दधीचि देहदान समिति दिल्ली के संरक्षक आलोक कुमार व जयपुर नगर निगम ग्रेटर की मेयर सौम्या गुर्जर। इन सभी का ग्रुप्स के संस्थापक अध्यक्ष कमल संचेंती ग्रुप के अध्यक्ष संजय सिंह बैद,सचिव सीए गुंजन छाजेड,नवीन डोसी,उत्तम खटोड़,सुमंत जैन,अरुण सिंघवी,सीए अषोक हरकावत, अषोक छाजेड़, सुधेन्द्र चैरडिया, व सुरेश जैन आदि ने माल्यार्पण व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। विश्व अंगदान दिवस की थीम ''बी दी रिजन फॉर समवन्स स्माइल टुडे'' पर प्रकाश डालते हुए उपराष्ट्रपति, धनखड़ ने सभी से आह्वान किया है कि वे अपने समाज की परंपरा को कायम रखते हुए अंगदान को भी इसी भावना से जोड़ें।उन्होंने कहा, आप ऐसे समाज के सदस्य हैं जो हर मौके पर हर किसी की मुस्कान का कारण बनते हैं। इस अवसर को भी इस भावना से जोड़ें और संकल्प लें कि हर सप्ताह आप कुछ ऐसा करेंगे जिससे आपका व्यक्तिगत और पारिवारिक योगदान अंगदान के इस पवित्र कारण में शामिल हो सके। प्राचीन ज्ञान, इदम् शरीरम् परमार्थ साधनम्! का उद्धरण देते हुए, धनखड़ ने मानव शरीर की महत्ता को व्यापक सामाजिक भलाई के साधन के रूप में रेखांकित किया और कहा कि यह शरीर समाज के व्यापक कल्याण के लिए एक उपकरण बन सकता है। अंग दान में बढ़ते ह्यव्यावसायीकरण के वायरसह्य पर चिंता व्यक्त करते हुए, धनखड़ ने जोर दिया कि अंगों को आर्थिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए सोचकर दान किया जाना चाहिए। चिकित्सा पेशे को ''दैवीय व्यवसाय'' के रूप में संदर्भित करते हुए और कोविड महामारी के दौरान ''स्वास्थ्य योद्धाओं'' की निःस्वार्थ सेवा को उजागर करते हुए, उन्होंने कहा कि चिकित्सा पेशे में कुछ व्यक्ति अंग दान के महान स्वभाव को कमजोर करते हैं। उन्होंने कहा, ''हम अंग दान को कमजोर लोगों के शोषण का क्षेत्र नहीं बनने दे सकते जो चालाक तत्वों के व्यावसायिक लाभ के लिए हो।'' उपराष्ट्रपति ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर की याद दिलाते हुए, सभी से आग्रह किया कि वे हमारे शास्त्रों और वेदों में निहित ज्ञान पर विचार करें, जो ज्ञान और मार्गदर्शन का विशाल भंडार हैं। अपने संबोधन में, श्री धनखड़ ने विशेष रूप से कॉर्पोरेट्स, व्यापार संघों, और व्यापार नेताओं से स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने और उसके बाद अपने आप आयात को केवल उन वस्तुओं तक सीमित करने का आह्वान किया जो अत्यावश्यक हैं। अध्यक्ष संजय सिंह बैद,सचिव सीए गुंजन छाजेड़ ने बताया कि इस मौके पर शहर के 45 जैन सोष्यल ग्रुप के पदाधिकारी,जैन समाज के अलावा अन्य समाजों के प्रतिनिधि मौजूद रहे। मंच संचालन पुणे की अनीता शाह ने व अभार ज्ञापित ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष कमल संचेती ने जताया।

जेल स्टाफ और कैदियों के बांधे रक्षासूत्र

सुशील चौहान. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। लायंस क्लब भीलवाड़ा शक्ति के तत्वावधान में जिला कारागृह में जेल स्टाफ व कैदियों के रक्षासूत्र बांधे।क्लब सचिव शोभा चौधरी ने बताया कि क्लब अध्यक्ष डॉ अनीता आर्य की प्रेरणा से जेल सुपरिटेंडेंट भैरु सिंह, डिप्टी जेलर हीरालाल के सानिध्य एवं उपस्थिति में कारागृह में सभी जेल स्टाफ एवं 400 कैदी भाइयों को रक्षा सूत्र बांधा गया और सभी का मुंह मीठा कराया। सभी कैदी भाइयों को बुराई का रास्ता छोड़ एवं नशे से दूर रहने का संकल्प दिलाया।इस मौके पर कोषाध्यक्ष राजेंद्र राठी, उपाध्यक्ष ममता सिंह, सुरभि चौधरी, नारी शक्ति संगठन की अध्यक्ष अनीता पहाड़िया, भीमाबाई , संगीता खींची, पिंकी खटीक, ज्योति खटीक, आदि उपस्थित थे।

सक्षम दिव्यांग सेवा केंद्र भीलवाड़ा में प्रारंभ हुई दिव्यांगों के लिए निशुल्क एंबुलेंस सुविधा

प्रकाश पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। दिव्यांग सेवा के लिए निशुल्क एंबुलेंस सुविधा प्रारंभ कर दी गई है।केंद्र के अध्यक्ष सुभाष जैन ने बताया कि कोई भी दिव्यांग बंधु जिसे एंबुलेंस सुविधा आवश्यक है वह केंद्र पर फोन करके यह सुविधा प्राप्त कर सकता है।इसका विधिवत मुहूर्त आज किया गया। प्रांतीय अध्यक्ष महावीर प्रसाद शर्मा ने बताया कि दिव्यांग सेवा केंद्र की सारी गतिविधियां जन सहयोग से चलती है। इस अवसर पर सचिव चैतन्य प्रकाश, जिला अध्यक्ष सूर्य कुमार बोहरा, सचिव शिव प्रकाश, कोषाध्यक्ष मूलचंद लोहार, उपाध्यक्ष प्रभु लाल सुवालका, प्रियतम कंवर,राजेंद्र पारीक, राजेश मुनौत, युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष अभिषेक पांचाल,शशांक पारीक,भानु प्रताप, ई मित्र सूरज,सेवक सुनील आदि उपस्थित रहे।

उपखण्ड अधिकारी ने वीरांगना से बंधवाई राखी

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। नसीराबाद के उपखण्ड अधिकारी देवीलाल यादव ने राज्य के मुख्यमंत्री के निर्देशों पर उपखण्ड क्षेत्र की वीरांगना के निवास स्थान ग्राम जिलावड़ा जाकर रविवार को राखी बंधवाई। उपखण्ड अधिकारी देवीलाल यादव ने ग्राम जिलावडा जाकर जिलावडा निवासी शहीद छोटू खां के निवास पर जाकर उनकी पत्नी वीरांगना महफूल बेगम से राखी बंधवाई एवं उन्हें मिठाई, श्रीफल, शॉल एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का संदेश सहित 2100 रुपये भेंट किए। इस अवसर पर विधायक रामस्वरूप लाम्बा, श्रीनगर विकास अधिकारी महेश चौधरी, थानाधिकारी श्रीनगर जसवंतसिंह एवं नायब तहसीलदार श्रीनगर रामनिवास गोदारा सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

सर्वार्थ सिद्धि बालिका छात्रावास में संगोष्ठी संपन्न

मनीष विद्यार्थी. शाबाश इंडिया

भोपाल ।सर्वार्थ सिद्धि बालिका छात्रावास भोपाल में शुभारंभ में के प्रथम सत्र की बालिकाओं द्रव्य गुण पर्याय विषय पर गोष्ठी संपन्न।जिसमें समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट के उपाध्यक्ष अजितकुमार शास्त्री जयपुर के निर्देशन में उनके द्वारा कराए गए अध्यापन से द्रव्य गुण पर्याय विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सभी अध्यनरत में छात्राओं ने भाग लिया। सभी छात्राओं ने अपने विषय बड़े ही मर्मस्पर्शी शब्दों में अपने विषय पर स्पष्ट वक्तव्य दिए, जिसमें छात्राओं में प्रथम रौनक जैन द्वितीय अक्षरा जैन तृतीय हर्षिता जैन स्थान प्राप्त किये। बालिकाओं के उत्साहवर्धन हेतु डायरी, पेन एवं पुरस्कार वितरित किए गए। कौशल जैन संजीव जैन एस पी जैन निपुण जैन ने सभी बहिनों को शुभाशीष तथा मार्गदर्शन दिया।

वात्सल्य एवं आत्मीयता का पर्व रक्षाबंधन, वैर दूर कर कलाई पर बांधे राखी: आचार्य सुंदरसागर महाराज

शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित सुपार्श्वनाथ पार्क में वर्षायोग प्रवचन

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा ।जब तक हमारे अंदर के कषाय समाप्त नहीं होंगे तब तक रक्षा के भाव जागृत नहीं होंगे।रक्षाबंधन पर्व में रक्षा शब्द आता है।मुनियों पर उपसर्ग से इस पर्व की शुरूआत हुई।मान्यता है कि 700 मुनियों पर आए उपसर्ग को विष्णुकुमार मुनि ने अपनी साधना को छोड़कर विक्रिया से छोटा रूप बनाते हुए मुनियों की रक्षा कर उपसर्ग दूर किया।मुनि साधक होने के साथ रिद्धियां भी रखते है लेकिन कभी उनका उपयोग अपने लिए नहीं करते है।वह हमेशा मानवता व परमार्थ के लिए कार्य करते है।ये विचार शहर के शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित सुपार्श्वनाथ पार्क में श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में चातुर्मासिक(वषार्योग) प्रवचन के तहत रविवार को राष्ट्रीय संत दिगम्बर जैन आचार्य पूज्य सुंदरसागर महाराज ने व्यक्त किए।उन्होंने कहा कि भाई-बहन का पर्व होने से रक्षाबंधन का लौकिक महत्व भी है।यह लेनदेन का नहीं बल्कि आपस में वात्सल्य एवं आत्मीयता का त्यौहार है।रक्षा के भाव से आपस में राखी बांध सकते है। आचार्यश्री ने कहा कि हम सबको सुधारने का प्रयास करते है लेकिन खुद को नहीं सुधारते जिसके कारण परिणाम खराब हो रहे है।स्वयं को सुधार लेना रक्षाबंधन हो जाएगा।आप सौभाग्यशाली है कि आपको साधु संतों का सानिध्य मिल रहा है।उन्होंने कहा कि बहु बेटियों को देने पर दुआ मिलती है।बेटियां हमेशा दुख में काम आती है।अगर किसी बहन का भाई से बैर हो तो उसे भूलकर पास में चली जाना ओर राखी बांध कर आपस में प्रेम बढ़ा लेना।रक्षाबंधन का पर्व प्रेम का पर्व है।इससे पूर्व प्रवचन में मुनि श्री सुधीर सागरजी महाराज ने कहा कि संसार का प्रत्येक प्राणी प्रेम चाहता है क्योंकि उसका जन्म प्रेम से होता है।प्रेम आत्मीयता को जन्म देता है।प्रेम देह से नहीं आत्मा से होना चाहिए।नारी ने हमेशा प्रेम की बारिश की है।इसी प्रेम से वह कलाई पर सूत के धागे की राखी बांधती है।उन्होंने कहा कि संतों की रक्षा का दायित्व श्रावकों का है।